Year—18

चिल्ली लीला - 209

दीवानी चिपकी काटिये और चिपकाईये

कुत्तों से सावधान

इस घर के कुत्ते पागल कुत्तों का रिहर्सल कर रहे हैं

जब आफिस जाते समय अपना स्कूटर रोक कर किसी कार चलाने वाले को गलत ड्राईविंग पर मरने मारने को तैयार हो जाए···

और आफ़िस पहुंच कर आपको पता चले कि आपका
बॉस नया-नया ट्रांसफर होकर आया है वह वही कार चला
वाला व्यक्ति है।

और अधिक लाजवाब सवाल आगामी अं

धारावाहिक उपन्यास

खौफनाक आवाजें

लेखक :- कैप्टन युद्धवीर

भाग- ६

सेठ रघुनन्दन आँधी-पानी के कारण क्लब में फंसे रह गए और धर्मवीर पांडे नामक नौजवान उनकी कार चुरा कर उनके बंगले में पहुंचा। सेठानी और उसकी दो बेटियों को वह इस धोखे में ले गया कि सेठ जी हास्पिटल में उन्हें बुला रहे हैं। रास्ते में उन्हें लूट कर वह युवक चम्पत हो गया। सेठ जी घर पहुंचे तो नौकर-नौकरानी बंधे पड़े थे; अलमारी में लाश लटक रही थी; एक सूटकेस में भयानक खिलौने पड़े थे। उन्होंने जासूस बलजीत को जाँच का काम सौंपा, ताकि पुलिस की खींचतान से बच सकें। अगले दिन अखबार में लाश की फोटो देख कर एक प्रोफेसर आया जो सूटकेस और खिलौनों का मालिक था। इस बीच प्रोफेसर की प्रेमिका सोमा की हत्या हो गई। जब अलमारी में पाई गई लाश की शिनाख्त हुई तो उसके बंगले की तलाशी ली गई। तलाशी में एक ऐसी लड़की की फोटो मिली जिसका साथी उजाड़ जगह में मुर्दा पाया गया था। उसका पता मालूम करके पुलिस और जासूस उसके फ्लैट पर गए तो वहां एक औरत से उनका सामना हुआ।

यह तो पता लग ही चुका है कि वे रात में वहां आया करते थे। भयानक आवाजें वे शायद इसलिए पैदा किया करते थे कि कोई भूले-भटके ही उधर का रुख न करे। अपनी वहां मौजूदगी की वे किसी को जानकारी नहीं होने देना चाहते थे।'

'समझ गया।'

'इन्स्पेक्टर साहब ! सोमा की फोटो तो आप अखबारों में दे ही चुके होंगे। मैं आपको गीता की फोटो भी दिये देता हूं। यह फोटो भी अखबार में छपवा दीजिये। इसके साथ भी अपील छपनी चाहिये कि जो कोई इसे जानता हो, वह आपसे आकर मिलें।'

'छपवा दूंगा।'

'अब आप लाश के लिबास की तलाशी लीजिये।' बलजीत ने सलाह दी।

इन्स्पेक्टर आगे बढ़ कर लाश के पास घुटनों के बल बैठ गया। जेबों में से सिर्फ एक रूमाल निकला।

'तो आइये, हम चलकर जरा केवलकृष्ण की कार देख लें।'

इन्स्पेक्टर और बलजीत पलट कर केवलकृष्ण की कार के पास चले आये। कार में केवलकृष्ण के नाम का लाइसेंस था; सिगरेट का पैकेट था जिसमें चार सिगरेट बाकी थीं; सिगरेट-लाइटर भी था। इसके सिवा कुछ नहीं था।

'अब जरा कार की डिकी देखी जाय।' बलजीत ने कहा। उसने पिछली ओर आकर मास्टर चाबी से कार की डिकी का ताला खोला और ढक्कन ऊपर उठा दिया। डिकी में छोटा-सा नया सूटकेस था और उसके ऊपर बन्दूक थी।

इन्स्पेक्टर शर्मा हैरान रह गया, 'बन्दू...क !'

बलजीत ने बन्दूक उठा कर देखी और बोला, 'यह पुरानी बन्दूक है—थ्री-नॉट-थ्री की। शायद यह फौज या पुलिस से चुराई गई है। मेरे विचार में यह वही बन्दूक है जिससे हमारे ऊपर गोली चलाई गई थी। इसकी गोली मेरी कार में लगी थी जो मुझे सेठ रामचरण ने दे रखी है।'

'वही होगी।'

बलजीत ने अब छोटा-सा सूटकेस बाहर को खींचा और जमीन पर रख कर उसे खोला। उसमें कपड़ों का एक जनाना और एक मर्दाना लिबास थे। बलजीत ने कहा, 'ऐसे ही कपड़े मैंने केवलकृष्ण के बंगले में भी देखे हैं। शायद ये तीनों कहीं जा रहे थे—यह मृतक, गीता और ग्राण्डील आदमी। किसी बात पर गीता और ग्राण्डील आदमी ने मिल कर अपने ही साथी को मौत के घाट उतार दिया।'

'जब ये तीनों हीं साथी थे तो उन्होंने एक आदमी को क्यों मार डाला ?' इन्स्पेक्टर ने प्रश्न उठाया।

'मेरा दिल कह रहा है कि गीता और ग्राण्डील आदमी अपने साथी को ठिकाने लगाने के लिए ही इकट्ठे होकर निकले थे।'

'अगर यह सच है तो कार को बीच रास्ते क्यों छोड़ गए ? डिकी में अपने लिबास और बन्दूक क्यों छोड़ गए ?'

'हत्या के बाद वे डर गए होंगे। हो सकता है कि सूटकेस और बन्दूक अपने साथ ले जाना उन्होंने ठीक न समझा हो। खैर, आप अपनी कारवाई पूरी कीजिये। मैं चलता हूं।'

बलजीत 'कारोनेशन होटल' को लौटते हुए सोच रहा था कि गीता की फोटो केवलकृष्ण के यहां कैसे पहुंच गई ? क्या गीता भी उसकी रखैल थी ? दो ग्राण्डील नौजवानों से केवलकृष्ण का क्या नाता था ? कार में पाई गई बन्दूक क्या केवलकृष्ण की थी ?

इसी उधेड़बुन में वह अपने होटल में आ पहुंचा।

अनिला उस समय किसी औरत से बातें कर रही थी, 'मिसेज सरिता ! आप बस दस मिनट और रुक जाइये। बलजीत बाबू आते हो होंगे।'

तभी बलजीत ने कमरे का दरवाजा खोल दिया।

अनिला बोली, 'लीजिये, वह आ ही गए !'

बलजीत ने उस औरत को हाथ जोड़ कर 'नमस्ते' कही तो जवाब में उसने भी हाथ जोड़ दिये। वह अधेड़ आयु की आकर्षक महिला थी।

अनिला ने मिसेज सरिता की ओर इशारा करते हुए कहा, 'आप मिसेज सरिता हैं। अखबार में मिसेज सोमा की फोटो और खबर देख कर यह उनके बारे में कुछ बताने

आई हैं।'

'जरूर बताइये।' बलजीत बोला।

सरिता बोली, 'सोमा मेरी ही फर्म में काम करती थी। हम दोनों की मेज साथ-साथ थी।'

'आप सोमा के बारे में क्या बताना चाहती हैं?'

'आप नहीं जानते कि सोमा बड़ी दिलेर और निर्भीक औरत थी। अपनी प्राइवेट जिन्दगी के बारे में बड़ी निडरता से बात कर लेती थी। मैं इसी बारे में अपना शक आपके सामने रखने आई हूं।'

'कैसा शक?'

'मुझे शक है कि दो में से एक मर्द ने सोमा की हत्या कर दी होगी।'

'आप किन दो मर्दों की बात कह रही हैं?'

'आप नहीं जानते कि सोमा एक ही समय में दो-दो मर्दों से प्रेम करती थी।'

'वो कौन मर्द हैं?'

'एक तो कोई प्रोफेसर पांडे हैं। उसके बारे में सोमा ने कहा था कि वह उसे अपनाना नहीं चाहती।'

'दूसरा कौन है?'

'कैलाश नाथ। उसे वह अपने प्रेम के जाल में फांस लेना चाहती थी।'

'क्या आप कैलाश नाथ का हुलिया बता सकती हैं?'

'क्यों नहीं!' सरिता ने हुलिया बता दिया।

सुनकर अतिला और बलजीत दंग रह गए। यह वही हुलिया था जो तालकटोरा रोड के किनारे झाड़ियों के बीच जोहड़ के पास पड़े नौजवान का था। इसका अर्थ यह था कि कैलाश नाथ की हत्या हो चुकी थी। बलजीत की उत्सुकता आकाश को छूने लगी।

सरिता ने आगे बताया, 'सोमा ने कहा था कि कैलाश नाथ एक खास योजना पर अमल कर रहा है।'

'कैसी योजना?'

'योजना के बारे में तो सोमा ने कुछ नहीं बताया था, मगर यह विश्वास उसे पक्का था कि अगर कैलाश नाथ अपनी योजना में कामयाब रहा तो वह सोमा को अपने साथ पेरिस ले जाएगा।'

'सोमा ने उस योजना के बारे में कभी कोई इशारा तो जरूर दिया होगा?' बलजीत ने फिर से सरिता को कुरेदा।

सरिता दिमाग पर जोर डाल कर कुछ याद करने लगी। कुछ पल बाद वह बोली, 'एक बार सोमा ने कहा था कि कैलाशनाथ लाखों पर हाथ मारना चाहता है और उसका पासा सीधा पड़ने वाला है। उसने सोमा को यह भी बताया था कि कामयाबी पाने के लिए वह किसी गीता नाम की औरत से मदद ले रहा है।'

यह सुनकर बलजीत की आंखें फैल गईं। इसका मतलब है कि जिस गीता की फोटो केवलकृष्ण के बंगले में मिली थी, वह कैलाशनाथ से मिली हुई थी। क्या गीता के मन में कोई वैर था? क्या वह कैलाशनाथ

'मिसेज सरिता! कैलाश नाथ ने सोमा को गीता के बारे में यह कहा था कि वह अधेड़ आयु की औरत है?'

'जी हां।'

'शुक्रिया, मिसेज सरिता! आपने हमें बड़ी उपयोगी जानकारी दी है। इस केस को हल करने में इससे हमें बहुत मदद मिलेगी। कहिये, आप क्या पीजियेगा?' बलजीत ने पूछा।

'कुछ नहीं। मैं अब चलती हूं।' मिसेज सरिता ने उठते हुए कहा।

'आप एक बात बताती जाइये। क्या सोमा ने आपको यह भी कभी बताया था

को धोखा दे रही थी? गीता ने किसी ग्राण्डील को कैलाश नाथ की हत्या में मदद दी थी। आखिर यह चक्कर क्या था?

बलजीत ने पूछा, 'क्या आपने गीता को कभी देखा था?'

'नहीं। उसे तो सोमा ने भी नहीं देखा था। कैलाश नाथ ने भी सोमा को गीता के बारे में कुछ नहीं बताया था। सिर्फ इतना-सा इशारा किया था कि गीता अधेड़ उम्र की है और वह अपने साथ हुए अत्याचार और अन्याय का बदला लेना चाहती है। कैलाशनाथ ने यह भी सोमा से कहा था कि गीता ही जानती है...'

'क्या?'

'कि लाखों रुपये कहां पड़े हैं?'

बलजीत को सरिता की इस बात से बड़ी हैरानी हुई कि गीता अधेड़ आयु की है। गीता की जो फोटो उसकी जेब में थी, उसमें वह एकदम ताजा गुलाब दिखाई देती थी। कैलाश नाथ ने सोमा को जिस गीता की बात कही थी, क्या वह कोई दूसरी औरत थी?

कि कैलाश नाथ कहां रहता है?'

'हां, एक बार उसने यह कहा था कि कैलाश नाथ सप्रू मार्ग पर २१९ नम्बर के बंगले में रहता है।'

'धन्यवाद!'

मिसेज सरिता चली गईं।

तभी टेलीफोन की घंटी बजने लगी। बलजीत ने रिसीवर उठा कर कहा, 'हलो!'

'बलजीत बाबू! मैं इन्स्पेक्टर शर्मा बोल रहा हूं।'

'कहिये?'

'हमें मृत नौजवान का बटुवा मिल गया है जिसे खाली करके झाड़ियों में फेंक दिया गया था।'

'बटुए में कुछ भी नहीं मिला?'

'इसमें एक लड़की की फोटो है और फोटो में मृत नौजवान उसके साथ खड़ा है।'

'फोटो के नीचे या पीछे नाम पता भी लिखा?'

'नहीं।'

'फोटो के पीछे क्या उस स्टूडियो का

नाम-धाम भी नहीं है जहां यह फोटो खींची गई ?'

'जी नहीं। यह एक आम फोटो है।'

'आम फोटो ? क्या मतलब ?'

'बाजारी फोटो है जैसी पांच मिनट में तैयार करके गाहक के हवाले कर दी जाती है।'

'ओ···ह !'

'फोटो धुंधली पड़ती जा रही है, मगर इतनी धुंधली नहीं पड़ी कि चेहरे पहचाने न जा सकें।'

'इन्स्पेक्टर साहब ! मैंने भी एक काम की बात जान ली है।'

'कौन-सी ?'

'झाड़ियों में मुर्दा पाए गए नौजवान का नाम और पता मुझे मालूम हो चुका है।'

'सचमुच ?'

'अजी, हाथ कंगन को आरसी क्या ! उस नौजवान का नाम भी आपको बता रहा हूं और पता भी।'

'बोलिये ?'

'उसका नाम कैलाश नाथ था और सप्रू मार्ग पर २१९ नम्बर के बंगले में निवास करता था।'

'यह हुई न बात !' इन्स्पेक्टर खुश होकर बोला, 'इसे कहते हैं जासूसी !'

'तो फिर आप वहां सीधे पहुंचिये। मैं भी इधर से चल रहा हूं।' यह कह कर बलजीत ने रिसीवर क्रैडल पर रखा और अनिला को लेकर सप्रू मार्ग को रवाना हुआ।

उधर इन्स्पेक्टर शर्मा पहले पहुंच गया। उसने बिल्डिग के बगल में दुकानदार से पूछ-ताछ करके कैलाश नाथ के फ्लैट और जीवन के बारे में थोड़ी जानकारी ले ली थी।

बलजीत और अनिला का उसने हाथ हिला कर स्वागत किया। पास आने पर उसने पूछा, 'आपको उस नौजवान का नाम और ठिकाना कैसे मालूम हुआ ?'

बलजीत ने उसे सरिता की बाबत सब कुछ बता दिया।

'आइये, दूसरी मंजिल पर चलें।' कैलाश नाथ का फ्लैट नम्बर सात है।' इन्स्पेक्टर ने कहा।

'अनिला !' बलजीत ने धीमी आवाज में कहा, 'तुम यहीं-कहीं इस बिल्डिग की निगरानी करो। कोई संदिग्ध आदमी देखो तो उसे नजर में रखना।'

'अच्छा।' अनिला बैग झुलाती एक खम्भे की ओर चल दी।

बलजीत और इन्स्पेक्टर बिल्डिग में दाखिल हुए तो बलजीत ने कहा, 'इन्स्पेक्टर साहब ! वह फोटो तो दिखाइये जो कैलाश नाथ के बटुए में थी।

इन्स्पेक्टर ने जेब में से एक फोटो निकाल कर बलजीत को दे दी।

फोटो देख कर बलजीत बोला, 'बड़ी अजीब बात है !'

'क्या ?'

'फोटो में कैलाश नाथ बड़ा फैशनेबल जान पड़ता है, हालांकि इसके साथ खड़ी लड़की गांव की कोई अल्हड़ गोरी लगती है। फोटो में ये दोनों एकदम के जोड़ से लगते हैं।'

'हां।'

दोनों दूसरी मंजिल पर फ्लैट नम्बर सात के सामने पहुंच गए। फ्लैट का दरवाजा बन्द था। दोनों हैरान थे कि दरवाजे पर ताला क्यों नहीं था। हाथ दरवाजे पर रखा तो वह अन्दर से बन्द था। दोनों असमंजस में खड़े रह गए।

'मैं तो समझा था कि फ्लैट के दरवाजे को ताला लगा होगा, मगर यहां तो मामला ही कुछ दूसरा नजर आता है।' बलजीत ने कहा।

'कहीं कोई हमसे पहले तो यहां नहीं पहुंच गया ?' इन्स्पेक्टर शर्मा ने दरवाजे को ऊपर से नीचे तक घूरते हुए कहा।

'ऐसा कैसे हो सकता है ?'

'तो फिर क्या राय देते हैं ?'

बलजीत ने धीमी आवाज में कहा, 'फ्लैट में शायद कोई और भी रहता है।'

'लगता तो ऐसा ही है।' इन्स्पेक्टर बोला, 'दरवाजा खटखटाकर देख लेते हैं। अन्दर जो भी होगा, अभी सामने आ जाएगा।'

बलजीत ने दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक दी।

'कौन ?' अन्दर से किसी औरत की आवाज आई।

बलजीत के दिमाग में न जाने क्या आया, उसने बैठी हुई आवाज में कहा, 'कैलाश नाथ।'

अन्दर से कदमों की आहट दरवाजे की ओर बढ़ी। वही औरत यह कहती आ रही थी, 'अरे ! तुम्हारी आवाज को क्या हो गया ? कल से तुम कहां रहे हो ?' इसके साथ ही उसने दरवाजा खोल दिया। दरवाजे में आई औरत का हाथ डर और हैरानी के मारे उसके मुंह पर चला गया। उसने अपनी चीख रोक ली थी, मगर आंखें हैरानी में फैल गई थीं। उसने इधर-उधर झांकते हुए पूछा, 'कैलाश कहां है ?'

बलजीत और इन्स्पेक्टर देख रहे थे कि उनके सामने खड़ी औरत ने नये फैशन का लिबास पहन रखा था। यह वही गांव की अल्हड़ गोरी थी, जो कैलाशनाथ की फोटो में उसके साथ खड़ी थी।

'तुम कौन हो ?' इन्स्पेक्टर ने पूछा।

क्षण भर के लिए वह औरत सोच में पड़ गई और फिर बोली, 'मैं कैलाश की बहन सरस्वती हूं।' यह कहते हुए उसकी जबान थोड़ा लड़खड़ा गई।

'क्या तुम और कैलाशनाथ गांव के रहने वाले हो ?'

'हां, हम बदायूं के गांव शहबाजपुर के रहने वाले हैं।'

'यहां तुम दोनों कब से रह रहे हो ?'

'चार साल से।'

अब बलजीत ने पूछा, 'कैलाश यहां क्या काम करता है ?'

'यह मैं नहीं जानती। एक बाबू हैं केवलकृष्ण, उनके साथ काम करता है।'

बलजीत ने सरस्वती को गहरी नजरों से देखा। इसका रंग पीला-पीला था। आंखें सुन्दर और भूरी थीं। शहर में चार साल रहने के बावजूद उसके लहजे में थोड़ा देहाती रंग अब भी मौजूद था। बलजीत को एक और बात सूझी और वह उसी के बारे में सोचने लगा।

सरस्वती बोली, 'कैलाश कहां है ? उसे कोई ऐसी-वैसी बात···'

बलजीत ने इन्स्पेक्टर को जवाब देने

शेष पृष्ठ ४० पर

पिछले से पिछले अंक में आपने पढ़ा कि समाज में अमीरी-गरीबी के फर्क और अन्याय को देख कर पिलपिल और सिलबिल बागी हो जाते हैं। वह जंगलों में जाकर ३०३ सोशलिस्ट एक्शन ग्रुप नाम का डकैती गैंग बनाते हैं। उनका पहला शिकार महाजन खजानचन्द है। खजान चन्द सूद पर कर्ज देकर सबका खून चूसता है। ३०३ ग्रुप का उद्देश्य समाज के दुश्मन अमीरों से पैसा लूटकर गरीबों में बांटना है। खजानचंद के घर हमला करने से पहले क्रिकेट टैस्ट भारत आस्ट्रेलिया (पर्थ) पड़ जाता है। वे क्रिकेट टैस्ट के बाद ही हमला करने का प्रोग्राम बनाते हैं। आगे पढ़िये—

है क्यों नहीं बेवकूफ ? हमारे देश में सब झगड़ों की जड़ पूंजीवादी वर्ग है। यही पूंजीवादी सबका खून चूस रहे हैं, जनता गरीब हो रही है। गरीब होने के कारण आम आदमी की खुराक कम हो गयी है। लोग कमजोर हो गये हैं, हमारे क्रिकेट खिलाड़ी भी उसी शोषित गरीब वर्ग से आते हैं। लिहाजा वह भी कमजोर होते हैं और टैस्ट मेच हार जाते हैं। भाइयों जरा गहराई से सोचो पूंजीवाद हर जगह हम पर चोट करता है।

देखा तूने ? पिलपिल ने बात से बात खींच कर उसे रबड़ की तरह तान दिया और कहां से कहां ले जाकर मिला दिया। इतनी लम्बी तो हनुमान जी ने भी अपनी पूंछ रावण के दरबार में नहीं खींची होगी। अब यह...यह बात दिन की तरह साफ हो गयी है कि सूदखोर खजान चन्द ही भारत के पर्थ टैस्ट में हारने का कारण है। इन्हीं पूंजीपतियों ने वैंकट राघवन को घटिया इमली सप्लाई की। घटिया इमली की साम्बर खाकर भी कहीं कोई बाऊलर टैस्ट मेच में विकेट ले सकता है।

अच्छा तो यह बात है ? हम पर्थ टैस्ट में अगर खजान चंद और उसके पूंजीवादी भाई-बंधों के कारण ही हारे हैं तो मैं उसे सजा दूंगा। उसे छोड़ूंगा नहीं, मेरे दिल में जो दरद था उसमें आग लग गयी है।

मुझे पता है थम भी पूंजीपतियों के एजेन्ट हो। चारों तरफ गरीबों पर अत्याचार हो रहे हैं और थम दीवाना पढ़कर खी-खी करके टाइम गुजार रिये हो ? बाद में हम थमको भी देख लेंगे पहले उस सूदखोर से निवटने दो हमें।

३०३ (थ्री नॉट थ्री) सोशलिस्ट एक्शन ग्रुप अब हरकत में आ चुका है। अमीरों के मौत की घंटी वज गई है।

आज भारत का नया इतिहास खून से लिखा जाने वाला है। गरीबों का लहू हमें पंचम स्वर में पुकार रहा है।
पूंजीवाद ने अब तक बहुत उत्पात मचा लिया। उनका खेल अब खत्म ! अब कोई गुलशन न उजड़े अब वतन आजाद है। अमीरों के गंदे बदबूदार खून से अपने माथे पर टीका लगा कर क्रांति रूपी घोड़ी पर सवार होकर हम समाजवादी दुल्हन को ब्याह कर लाने के लिये बारात लेकर जा रहे हैं।
हमारी बारात में हिन्दुस्तान के करोड़ों वेसहारा अमीरों की चक्की में पिस्ते गरीबों की दुआयें भंगड़ा डांस पा रही हैं। हमारी बारात में वैंड बाजे की जगह बन्दूकों की गरज है। सुबह का सूरज एक नया सवेरा देखेगा। उसकी लाल किरणों का स्वागत खून से रंगी लाल गलियां करेंगी।

इस दुनिया से अन्याय का नामो-निशान मिटने वाला है। अब से दुनिया में सब बराबर हैं। कोई बड़ा कोई छोटा नहीं होगा। जिनका कद ठिगना होगा उनको भी हम कान से पकड़ कर खींच कर लम्बा कर देंगे। कोई अमीर और कोई गरीब नहीं है। अमीरों से लूटे रुपये पैसों को गरीबों में वितरण के लिये हम एक ट्रस्ट बनायेंगे। सभी गरीब भाइयों से प्रार्थना है कि वह अभी से अपने-अपने एप्लीकेशन फार्म कैपिटल लैटर्स में भरकर उस पर एक रुपये का रसीदी टिकट लगा कर फर्शट-किलास मजिस्ट्रेट से एटैस्ट-करवा कर तैयार रखें। अब किसी बहन को दहेज न होने के कारण आजीवन कुआंरी नहीं रहना पड़ेगा। गरीब का बेटा पैसों की कमी के कारण इंजीनियर या डाक्टर बनने से वंचित नहीं रहेगा। कोई किसी का शोषण नहीं करेगा। पूंजीवाद के दिन पूरे हो गये अब।
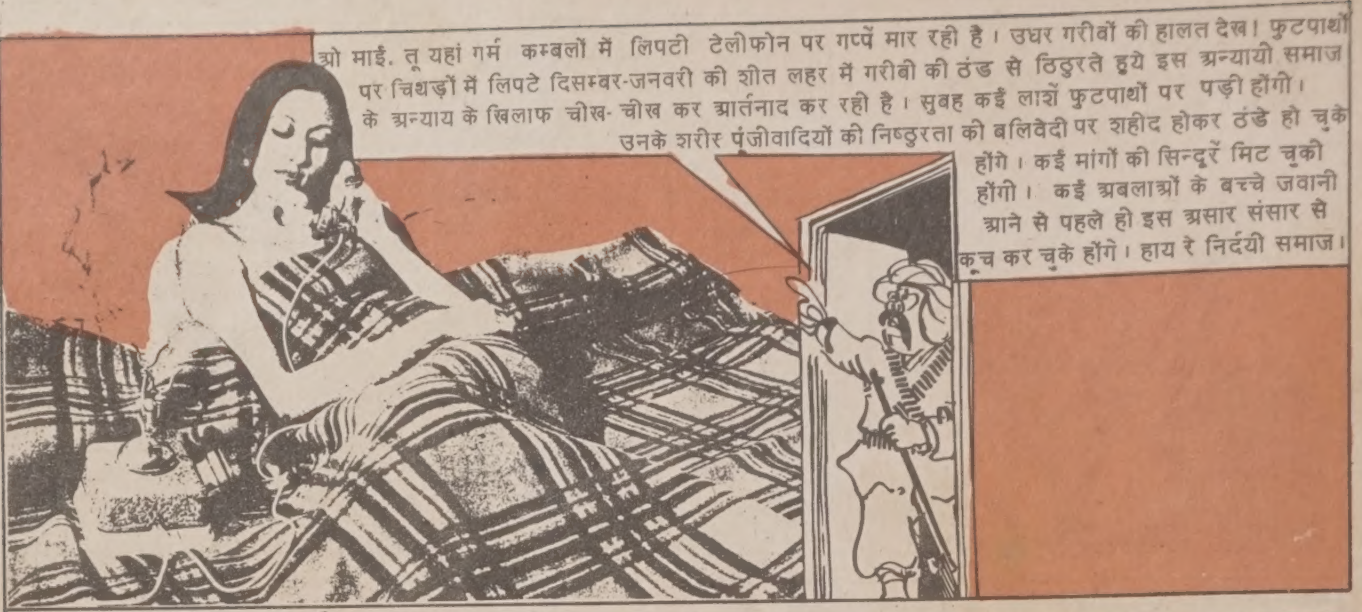
ओ माई. तू यहां गर्म कम्बलों में लिपटी टेलीफोन पर गप्पें मार रही है। उधर गरीबों की हालत देख। फुटपाथों पर चिथड़ों में लिपटे दिसम्बर-जनवरी की शीत लहर में गरीबी की ठंड से ठिठुरते हुये इस अन्यायी समाज के अन्याय के खिलाफ चीख-चीख कर आर्तनाद कर रही है। सुबह कई लाशें फुटपाथों पर पड़ी होंगी। उनके शरीर पूंजीवादियों की निष्ठुरता की बलिवेदी पर शहीद होकर ठंडे हो चुके होंगे। कई मांगों की सिन्दूरें मिट चुकी होंगी। कई अबलाओं के बच्चे जवानी आने से पहले ही इस असार संसार से कूच कर चुके होंगे। हाय रे निर्दयी समाज।

बहन जी, थम मुर्ग मुसल्लम पर हाथ साफ कर रही हो। इतना सारा खाना सिर्फ दो जनों के लिये। हां! निर्धनों की झुग्गियों में जाकर झांको। बच्चे बगैर दूध पिये सो चुके होंगे, माता-पिता राशन के घटिया आटे की सूखी रोटियां खाकर आधे पेट टूटी खाटों पर नींद की प्रतीक्षा में करवट बदल रहे होंगे। पौष्टिक भोजन के अभाव में शरीर से झांकती हड्डियां तुम अमीरों के कठोर हृदयों से न्याय की भीख मांगते-मांगते पीली पड़ चुकी होंगी।

और तुम ओ ऊंचे महलों में रहने वालो, आराम से डनलोपिल्लो सोफों में धंसे, फोर बैडरूम ड्राइंग-डाइनिंग टैरेसड एयर कंडीशंड फ्लैटों की सुरक्षा में बैठे रॉयल सैल्यूट और शिवास रीगल की चुस्कियां लेकर नशे में झूम रहे हो। ब्लैक की कमाई के पुण्य की धूप में शरीर सेंक रहे हो। इधर आंध्र प्रदेश में कुदरती साइक्लोन ने जो विनाश लीला निर्धनों के साथ खेली है उसे देखो। लोगों की थोड़ी सी जमीन जायदाद थी वह पूरी तरह नष्ट हो गई है। इनके पास खाने-पीने और सिर छुपाने के लिये जगह तक नहीं है। दवाओं के अभाव में महामारियां फैल रही हैं। लोग बेसहारा हो गये हैं। लेकिन तुम्हारे दिल नहीं पसीजे। ऊंचे महलों से नीचे कुचले जाते गरीबों पर नजर तक भी नहीं पहुंची।

सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

आपके पत्र

दीवाना का अंक ४८ मिला, पढ़कर दिल बाग-बाग हो गया !

स्तम्भ 'यदि पुराने जमाने के लोग व घटनायें आज होतीं तो क्या होता पर एक दीवानी नजर' तथा 'फिल्मी टाइटल घरेलू संदर्भ' में रोचक लगे ! चालू स्तम्भ पंचतंत्र, चिल्ली लीला, काका के कारतूस, अर्थ-अनर्थ, बन्द करो बकबास, क्यों और कैसे, मदहोश ठीक रहे ! कहानी केवल दस रुपयों के लिये तथा एक चांद के लिए पसन्द आयी, फिल्म पैरोडी व बाल समाचार चालू करो । शुभ-कामनाओं सहित— **भवंर लाल—कलकत्ता**

दीवाना का अंक ५० प्राप्त हुआ । मुखपृष्ठ पर ही जाड़े के दिनों में पके आम देखकर बड़ी खुशी हुई । पिलपिल-सिलबिल और मोटू-पतलू काफी पसन्द आये । छुट्टन-मिट्ठन, बन्द करो बकवास, अर्थ-अनर्थ और चिल्ली-लीला का तो कहना ही क्या ! 'खौफनाक आवाजें' का पहला भाग काफी रोचक रहा । क्यों और कैसे बोर लग रहा है । कृपया इसे बन्द कर दें । फिल्मी सामग्रियां कुछ और रहें तो दीवाना में चार-चांद लग जाएं । फिल्म-पैरोडी बहुत पसन्द आ रही थी लेकिन आपने कई महीनों से इसे नहीं छापा । क्या अब यह हमेशा-हमेशा के लिए बन्द कर दी गयी है । अगर हां तो क्यों बन्द हो गयी ? आशा है उत्तर मिलेगा । अगले हफ्ते के पूरे धूम-धड़ाका से भरे दीवाना के इन्तजार में !

विश्वरूप मिश्र—वाराणसी

पाठकों की बेहद मांग पर फिल्म पैरोडी शीघ्र ही छापी जायेगी ? —सं०

हिन्दी पत्रिकाओं में दीवाना एक ना-काबिले फरामोश पत्रिका है। किसी भी स्तम्भ को अलग-अलग स्थान नहीं दिया जा सकता। सभी हास्य रस से भरपूर हैं दीवाना ही एक ऐसी पत्रिका है जो हर वर्ग के लोगों का मनोरंजन करती है । मैं इस की सफलता की कामना करता हूं ।

हर एक जबान पर बस एक ही फसाना है ।
हंसी-मजाक का संगम यही दीवाना है ॥

हामिद अली खां—शाहजहांपुर

दीवाना अंक ५० मिला । आज पहले मैंने दीवाना पढ़ा और दीवाने का दीवाना बन गया । भई लोग तो गुठलियों के भी दाम लेते हैं । लेकिन आप तो मेहनत के ही पैसे ले रहे हैं । खैर मैंने तो सोचा चलो कुछ भी ले रहे हों बिना मौसम के आम खाने को तो मिले । हमारे मुंह में पानी तक आ गया । फिर क्या था खरीद तो लिया । लेकिन मुझे मालूम हुआ ये चोरी कर रहे हैं कहीं हम भी साथ में न पकड़े जायें । लेकिन मित्र ने कहा शेख चिल्ली मजाक कर रहे हैं । 'दीवाना' की दीर्घ समय तक उन्नति हो, यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है।

मीता गुप्ता—फतेहपुर

दीवाना का ताजा अंक ४९ पाकर नियमित पाठक होने के कारण खुशी से झूम उठा जिसके मुखपृष्ठ पर हास्य रस के पहलवान चिल्ली का अनोखा रूप देखकर मारे हंसी के बुरा हाल हो गया । यह अंक इस कदर अच्छा लगा कि खरीदने के बाद मैं सात बार पढ़ चुका है लेकिन जब तक नया अंक नहीं मिले शायद तब तक पढ़ता रहूंगा प्रेम-पत्र, काका के कारतूस, आपस की बातें स्तम्भ तथा विशेष नये पब्लिसिटी स्टंट व 'मुझे मेरे मित्रों से बचाओ' कहानी बहुत ही अच्छी लगी । सुपर स्टार मोटू-पतलू, आजकल बहुत ही अच्छे लगते हैं । इस अंक के लिए सारे दीवाना परिवार को मेरी ढेर सारी बधाई । **श्याम माहेश्वरी—विराटनगर**

मैं मदहोश सही लेकिन इतना मदहोश भी नहीं कि अच्छे और बुरे का फर्क भी न पहचान सकूं । मैं दीवाना सही मगर इतना दीवाना भी नहीं कि अपने दीवानेपन में अपनी प्यारी पत्रिका 'दीवाना' को भूल जाऊं । जब कभी दिल परेशान होता है और तनहाई घेरती है दीवाना अपनी आगोश में ले लेता है, सारे गम दूर हो जाते हैं । फिर तो एक ही ख्याल आता है काश ! कि दीवाना अधिक पृष्ठ का होता, मुझे हंसी की फुलझड़ियों के अलावा और भी कुछ मिला है वो है मेरे वफादार पेनफ्रेण्ड, रमेश शर्मा, परवीन जैन, ललित पांडया, नन्दलाल गुप्ता, जिन्हें मैं दीवाना की देन समझता हूं और इन सबकी शुभकामना के साथ-साथ मैं अपनी दीवानी पत्रिका की भी शुभकामना करता हूं । **निगार कैसर—शाहजहांपुर**

दीवाना अंक ५० मिला, मुखपृष्ठ पर चिल्ली का नया करतब देखकर मैं हंसे बिना नहीं रह सका । दीवाना का यह अंक मुझे बेहद पसन्द आया, कारण यह है कि इस बार 'मोटू-पतलू की कहानी विशेष रूप से पसन्द आई । नया उपन्यास 'खौफनाक आवाजें' ने पत्रिका में चार चांद लगा दिए । जब हम होंगे ८०-९० साल के चित्रों ने तो हंसा-हंसाकर दीवाना बना दिया ! कृपया फैण्टम चित्र कथा को बन्द कर दीजिए इसकी जगह आप कोई हास्य कहानी या लतीफे प्रकाशित करें तो मजा आ जाए । दीवाना ही एक ऐसी दीवानी पत्रिका है जिसे एक परिवार के सभी छोटे बड़े चाव से पढ़ते हैं । आगामी अंक के इन्तजार में—

एस० मन्जूर हसन 'कादरी'—बीकानेर

दीवाना का ५० वां अंक पढ़ा । हर अंक की तरह इस अंक में भी बहुत मजा आया है । मोटू-पतलू ने तो कमाल ही कर दिया, इस अंक में काका के कारतूस, परोपकारी दीवाना का पंचतन्त्र, मदहोश, पिल-पिल, सिलबिल के दृश्य, आपस की बातें और बन्द करो बकवास बहुत ही अच्छी लगी ।

सलीम शिराजी—रसड़ा

आज ही दीवाना अंक ५० पढ़ा । बहुत ही अच्छा लगा । चिल्ली का बेदी जी के नाम प्रेम-पत्र बहुत ही रोचक था । पंचतंत्र तो मुझे बहुत ही पसंद है । इससे दीवाना में चार चांद लग गये हैं । परोपकारी चाचा चौधरी, बंद करो बकवास, सभी स्थाई स्तंभ अच्छे थे । एक बात और आप चित्रकथा में मोटू-पतलू की पूरी कथा छापा करें । छुट्टन मिट्ठन बंद कर दें ।

मनजीत सिंह पुरबा—रामपुरा (पंजाब)

दीवाना अंक ४९ पढ़ा । स्थायी स्तंभ रोचक थे । प्रो० मधु दण्डवते के प्रेम-पत्र व राजेश खन्ना के लेख ने इसे चार चांद लगा दिये । 'आखिरी चीख' नया धारावाहिक कहानी की तो मिसाल नहीं, भविष्य में भी इसी प्रकार के अंकों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

रामजी दास बतरा—रोहतक

मोटू पतलू का कारनामा

आधी फाइल

पिछले दिनों रिसर्च लैबोरटरी के सामने से डा० खन्ना का अपहरण हो गया था। इससे पहले उनके एंटी एटम डिवाइस के प्रयोग की आधी फाइल चोरी हो गई थी। और अपहरणकर्ताओं ने सरकार से मांग की थी, कि यदि उन्हें एंटी एटम बम डिवाइस की बाकी आधी फाइल न दी गई तो वे डा० खन्ना की हत्या कर देंगे। लैबोरटरी के पास ही एक आश्रम था, जहां बहुत से साधू रहते थे। चेलाराम को शक था कि कुछ भेस बदलते हुए नकली साधू अपहरणकर्ताओं से मिले हुए हैं। इस केस की गहराई तक पहुंचने के लिए मोटू-पतलू ने आश्रम के सामने चाय की दुकान खोल ली है। और चेलाराम भी भेस बदल कर इन साधुओं में मिल गया है। यहां चेलाराम को यह राज मालूम हुआ है कि आश्रम में कबूतर पालने वाले चतुर स्वामी, भेस बदले हुए नकली साधू हैं। और सधाये हुए कबूतर के पाव में पत्र बांधकर रिसर्च लैबोरटरी के भेद अपने साथियों तक भेजते हैं।

चेलाराम इन्स्पेक्टर वर्मा से मिलकर उनके एक मित्र का सधाया हुआ कबूतर अपने कपड़ों में छुपा कर ले आया है। इसके बाद क्या हो रहा है, यह आगे के हंगामों में देखिये।

चतुर स्वामी के जाते ही चेलाराम उसकी कुटिया में घुस गया।
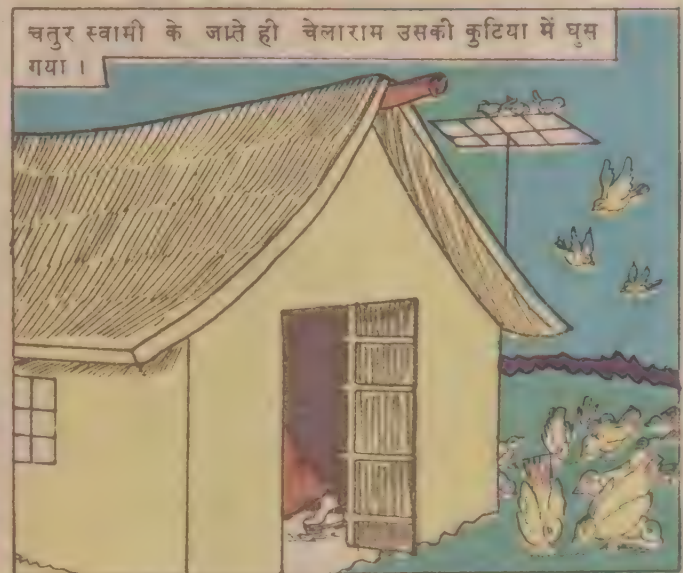
चेलाराम ने पलक झपकते ही चतुर स्वामी का कबूतर पिंजरे से निकाल कर उसकी जगह अपना कबूतर रख दिया।

कबूतर बदलने के बाद चेलाराम फिर कुटिया से बाहर आकर आराम से कबूतरों को दाना खिलाने लगा। तभी चतुर स्वामी स्नान करके वापस आ गये।
दाना कम पड़ा हो तो कुटिया के अन्दर से ले लिया था ना?
दाना बहुत है, मैं तो कुटिया के अन्दर भी नहीं गया।

थोड़ी देर बाद चेलाराम आंख बचा कर आश्रम से निकला और सीधा उस ओर चल दिया, जहां से उसे इंस्पेक्टर वर्मा ने कबूतर दिलवाया था।
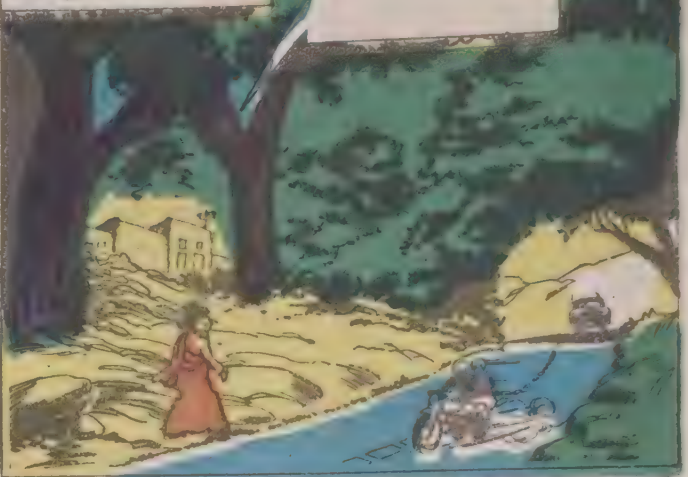
इंस्पेक्टर वर्मा वहां पहले से मौजूद थे।
बन गया काम?
बहुत आसानी से। यह रहा उनके पिंजरे का कबूतर, और हमारा कबूतर है उनके पिंजरे में।
ठीक है, वहां से छूटते ही सीधा यहां आएगा।
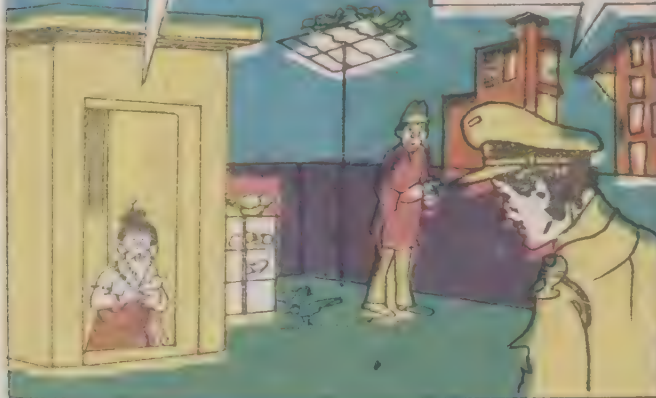
दूसरी ओर चतुर स्वामी को होश ही नहीं था कि यहां क्या हेरा फेरी हो गई है। आश्रम रिसर्च लैबोरटरी के पास था। वहां उसके चेले आसपास घूमते रहते थे। और उसे पुलिस और सरकार की गतिविधियां बताते थे। और चतुर स्वामी अपनी रिपोर्ट अपराधियों को भेजता था। आज उसने बहुत ही महत्वपूर्ण रिपोर्ट तैयार की थी।
अब बाजी हमारे हाथ है। सरकारी जासूसों को हमारी किसी बात का पता नहीं लग सकता।

उसने कागज की पर्ची को मोड़ कर कबूतर के पांव में बांधा, और कबूतर उड़ा दिया।
जा बता दे बॉस को कि अब कहानी का ड्राप सीन होने वाला है।

कबूतर उड़ता-उड़ता सीधा अपने ठिकाने पर पहुंचा।
वह आ गया! मैंने कहा था न, सौ मील की दूरी से भी सीधा यहां आएगा।
वह भेस बदला हुआ जोगी समझ रहा होगा कि उसने अपना जासूस कबूतर उड़ाया है।

तुमने जो एक और अपहरण की स्कीम बनाई है, उसमें डा० खन्ना की पुत्री रेखा का अपहरण ठीक रहेगा। वह आश्रम के सामने वाले टी स्टाल पर आती जाती है। टी स्टाल चलाने वाले मोटू-पतलू नाम के दो आदमी पुलिस के जासूस मालूम होते हैं। मैं उन्हें ठिकाने लगाने की तरकीब सोच रहा हूं। आश्रम में स्वामी चमचा राम नाम का एक नया साधू आया है। वह जितना मूर्ख है उतना ही मेरा बड़ा मान करता है। आगे की स्कीम में वह हमारे काम आ सकेगा। रेखा का अपहरण करने पर तुरन्त अपनी राय देना, तुम्हारा बॉस नं० २।

यह कढ़ी पक रही है ? अब रेखा की बारी है। और यह दोनों आलू बुखारे मोटू और पतलू जितने स्याने बनते हैं उतना ही अपना भांडा फोड़ देते हैं।

उन्होंने तुम्हें भी मूर्ख कहा है, क्या खुश हो रहे हो। तुम्हारे जैसा उल्लू मैंने आज तक नहीं देखा।

यह तो कमाल की बात है कि किसी को पता नहीं चला है कि मैं कौन हूं।
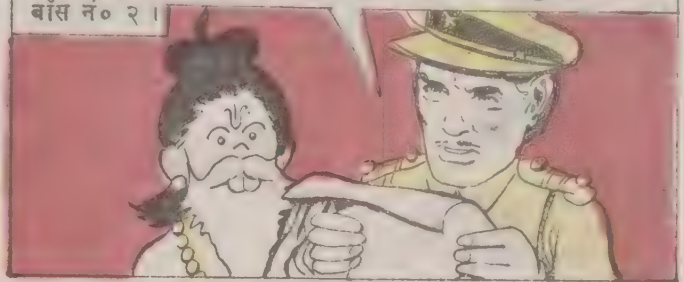
चेलाराम के दिमाग में जो हंडरेड मिलियन डालर का आइडिया आया था उसके अनुसार चेलाराम ने अब एक पत्र लिखा इसकी लिखावट ऐसी ही थी जैसा चतुर स्वामी का हैंड राइटिंग था।
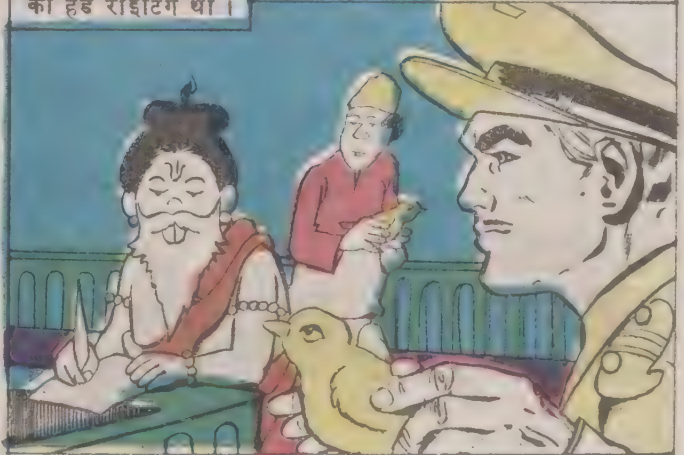
पत्र लिख कर उन्होंने उस कबूतर के पांव में बांधा जो चेलाराम चतुर स्वामी के पिंजरे से चुरा कर लाया था। और फिर यह कबूतर हवा में उड़ा दिया।

अपहरणकर्ता कबूतर और पत्र लेकर बिल्डिंग की छत से नीचे कमरे में आये और पत्र पढ़ा। उन बेचारों को क्या पता था कि यह कबूतर कहां-कहां से होता हुआ यहां आया है।
लिखा है, पुलिस को तुम्हारे ठिकाने का पता चल गया है।
मुझे इस बात का कुछ-कुछ शक हो रहा था।

एक पुलिस पार्टी तुम्हारी जगह का घेरा डालने के लिये भेजी जा रही है, खतरा है। भयानक खतरा, अधिक लिखने का समय नहीं सब साथियों को लेकर पुराने किले के पास लाल बगीची में पहुंच जाओ। हम सब भी वहीं पहुंच रहे हैं। डाक्टर की हत्या मत करना, काम बिगड़ जाएगा। तुम्हारा बॉस नं० २।
पुलिस को कैसे पता लग गया?
यह फिर सोचेंगे,
पहले यहां से निकल चलो
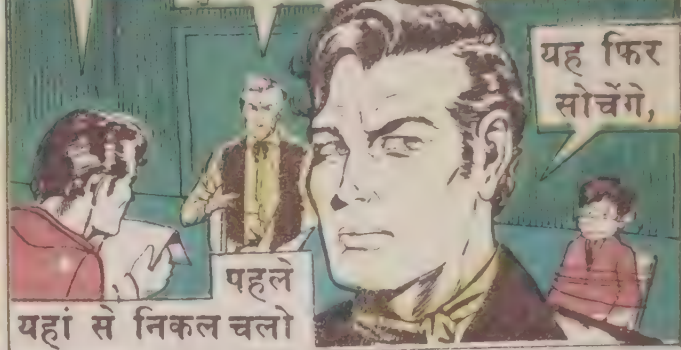
और पलक झपकते ही अब अपहरणकर्ताओं का गिरोह डा० खन्ना को लेकर एक जीप में लाल बगीची की ओर जा रहा था।
पुलिस के आने से पहले निकल चलो।
लाल बगीची पहुंचो।
जान बच गई, ठीक समय पर निकल आये हैं हम।
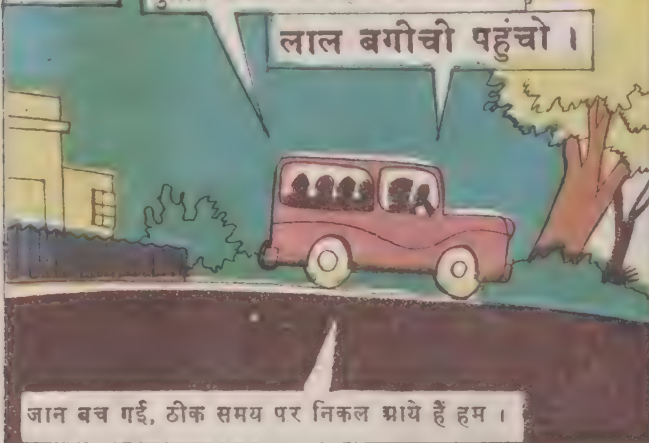
दूसरी ओर चेलाराम अब तक आश्रम पहुंच गया था और उसने अपना कबूतर फिर चतुर स्वामी के पिंजरे में डाल दिया था।
यह कौन सा कबूतर बन्द कर दिया पिंजरे में?
जो मैं लाया था…

म…म…मतलब है अभी-अभी मैं बाहर से पकड़ कर लाया था। आकाश से उड़ता हुआ आया था यह जब आप स्नान करने गये हुए थे।
इसके पांव में…
क्या चोट लगी है इसके पांव में, मुझे तो पता नहीं।
अच्छे मूर्ख से पाला पड़ा है। शुक्र है इसकी नजर इस पत्र पर नहीं गई।
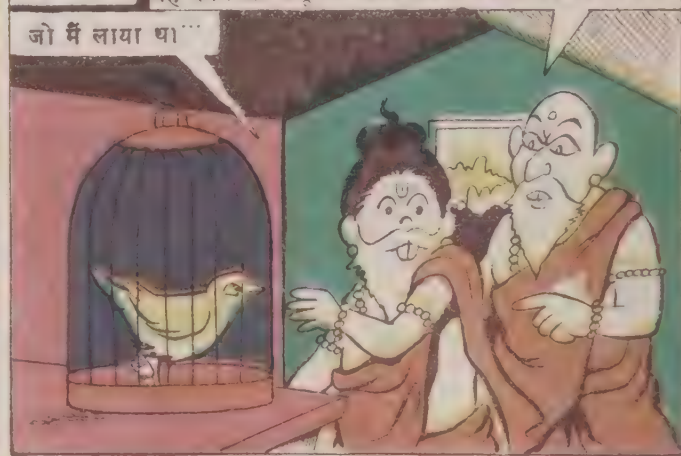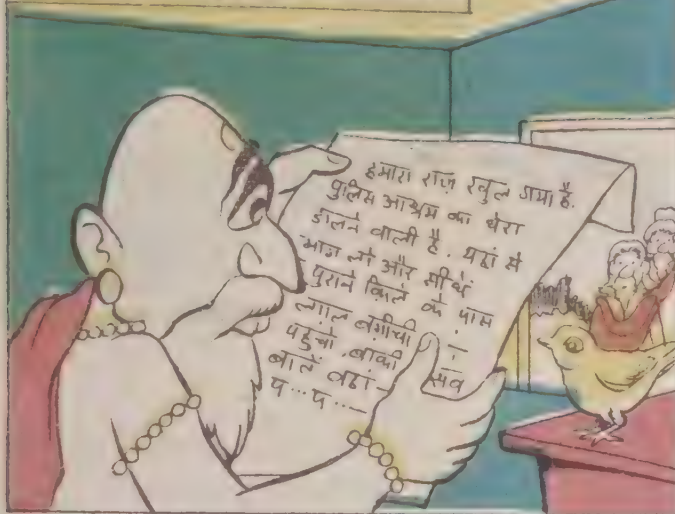
अच्छा तुम जाओ और बाहर जाकर कबूतरों को दाना खिलाओ।
अपना काम हो गया। अब मैं खुद यहां कब टिकने वाला हूं।
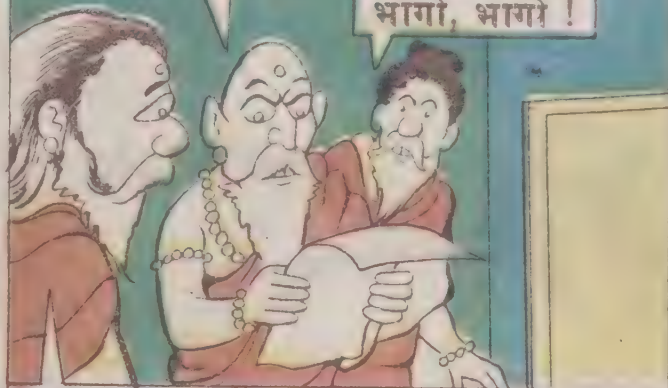
डाक्टर खन्ना के साथ बॉस नं० १ पहले से पहुंच गया है । अच्छा हुआ हम पुलिस के घेरे से बच गये ।

यह भी पुलिस से बचकर निकल आया । यह अच्छा हुआ । सभी लोग ठीक समय पर बच निकले हैं, यह समझ में नहीं आया कि पुलिस को हमारा भेद कैसे मालूम हुआ । अब हमें फिर से नई स्कीम बनानी होगी ।

इन जोकरों के नये कारनामे पढ़ने के लिए दीवाना का आगामी अंक पढ़ना न भूलिये।

छुट्टन और मिट्ठन के साथ फिल्म की शूटिंग में

झमूरे का पट्टूरा

पिछले दिनों दिल्ली में बुद्ध जयन्ति पार्क के पास 'रिज' की पहाड़ियों पर एक फिल्म की शूटिंग हो रही थी। वहां छुट्टन और मिट्ठन को फिल्म में एक रोल मिल गया। और उनसे कहा गया कि वे कहानी और सीन के अनुसार एक कुत्ता लेकर निर्धारित समय और निश्चित स्थान पर पहुंच जायें।

बहुत खतरनाक नरभक्षी है भूरा।
भूरा नहीं। उसका नाम पट्टूरा है। हम शूटिंग के लिए आए हैं।
नहीं, शूटिंग मत करना। उसे शूट तो हम भी कर सकते हैं पर जिन्दा पकड़ा तो पांच सौ रुपया इनाम मिलेगा।
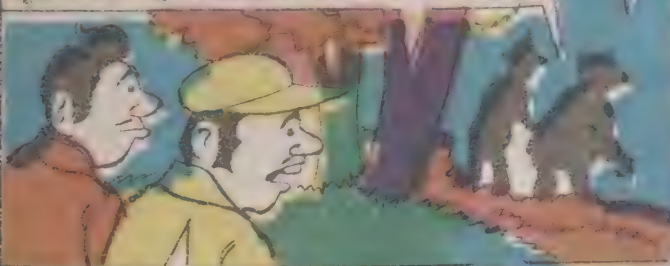
हंसते-हंसते बेहाल होने के लिए आगामी अंक में इनसे फिर मिलिये।
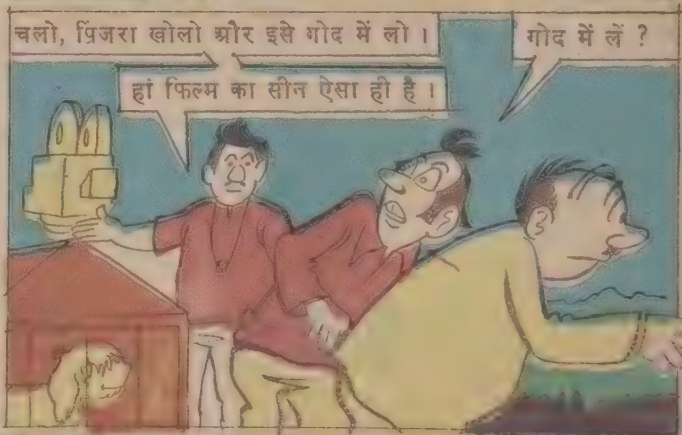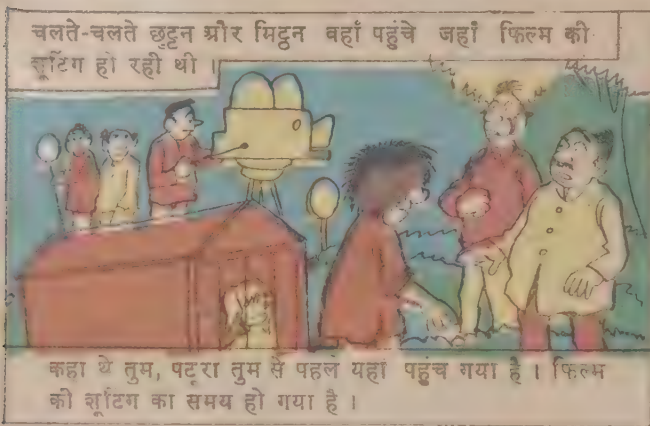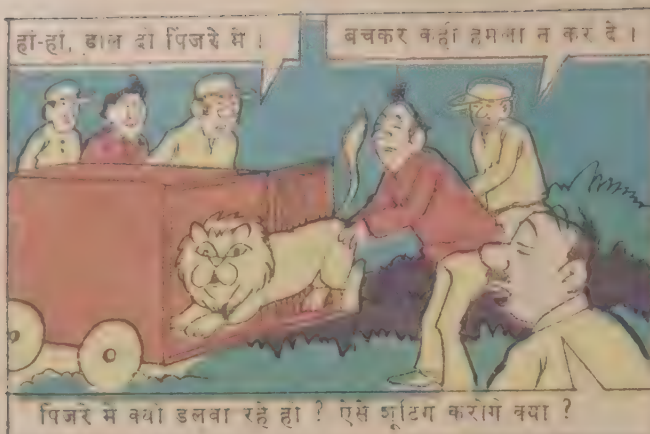
शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय—बिहार

प्र० : टैस्ट मैचों में रामनाथ पार्कर जैसे प्रारम्भिक एवं उदीयमान बल्लेबाज को चांस क्यों नहीं दिया जाता ?

उ० : सिलेक्शन बोर्ड में कोई समर्थक न होने के कारण उन्हें अवसर नहीं दिया गया।

गिरधरलाल रंगा—बीकानेर

प्र० : भारत में सबसे तेज निशानेबाज कौन है ?

उ० : महाराजा करणीसिंह।

अनिल अग्रवाल—राजस्थान

प्र० : बैड-मिन्टन के आविष्कारक व सन् बतायें ?

उ० : बैड-मिन्टन के आविष्कारक के सही नाम का ऐतिहासिक रूप से पता नहीं है। हां १२वीं शताब्दी में इस खेल का जिक्र मिलता है। २०० वर्ष पूर्व इंगलैंड में शटल-कॉक के खेल का प्रचलन था। ऐसा कहा जाता है कि बैड-मिन्टन नाम एक जगह के नाम से लिया गया जहां ब्यूफोर्ट का ड्यूक अपने मेहमानों के मनोरंजन के लिये यह खेल खिलाया करता था (१८७० के आसपास) इसके तुरन्त बाद यह खेल भारत में आया। वास्तव में बैड मिन्टन के प्रथम नियम १८७७ में भारत में हो बने।

रविन्द्र कुमार पाल—गोरखपुर

प्र० : पाकिस्तान का सबसे फास्ट बॉलर कौन है तथा उसने अब तक कितने विकेट लिये हैं ?

उ० : सरफराज नवाज पाकिस्तान के अग्रणी तेज गेंदबाज हैं। १९७७ इस वर्ष के इंगलैंड के नवम्बर-दिसम्बर दौरे से पहले उन्होंने ७२ विकेट लिये थे।

मुमताज आलम—सासाराम

प्र० : पाकिस्तानी क्रिकेट खिलाड़ी जहीर अब्बास तथा मुश्ताक मोहम्मद का टैस्ट रिकार्ड बतायें ?

उ० : जहीर अब्बास ने २८ टैस्ट खेले, १५८३ रन बनाये तीन शतक मारे। उनका उच्चतम स्कोर २७४ रहा। मुश्ताक ने ४९ टैस्ट खेले ३२८३ रन बनाये, दस शतक बनाये और ६२ विकेट लिये।

सतीश कुमार अरोड़ा—फरीदाबाद

प्र० : विश्व की सबसे अच्छी क्रिकेट टीम कौन-सी है।

उ० : पैकर सर्कस के कारण सारे विश्व की क्रिकेट टीमों का स्थान जरा गड़बड़ा गया है। स्थिति स्पष्ट होने में समय लगेगा।

सुभाष चन्द, विजय कुमार शर्मा—(राज०)

प्र० : बेदी ने कितने शतक मारे और कुल कितने रन बनाये, कितने टैस्ट मैच में बनाये,?

उ० : शायद आपको पता नहीं है कि बेदी स्पिन बॉलर हैं ? इतने विकेट लेने के बाद भी आप यह चाहते हैं कि वह रन भी सैंकड़ों में बनाये ? उन्होंने कोई शतक नहीं बनाया।

राजेश कुमार जैन—(म. प्र.)

प्र० : कृपया निम्न की गति बतायें, रणधीर सिंह, योगराज व कपिल देव ?

उ० : इनकी गति मापी नही गयी है। वैसे एक बात स्पष्ट है कि कपिल देव को छोड़ किसी की गति ७० मील प्रति घंटा से ऊपर नहीं जायेगी।

राजन चौधरी—पटियाला

प्र० : भारत के तेज गेंदबाज कर्सन घावरी का स्थान भारतीय तेज गेंद बाजों में कौन-सा है ?

उ० : घरेलू मैचों में तो उनका स्थान प्रथम है। खेद है कि आस्ट्रेलिया में भी टैस्टों में उन्हें स्थान नहीं दिया जा रहा है··· भारतीय तेज गेंदबाजों का यही दुर्भाग्य है। यदि ब्रिस्बेन और पर्थ में घावरी को मौका दिया जाता तो वह कम से कम (बॉलिंग के अतिरिक्त) ब्रिजेश पटेल से तो अधिक ही रन बना लेता। फिर हमारे सिलेक्टरों, कैप्टनों और मैनेजरों का ड्रामा देखिये कि फॉस्ट बॉलर न होने का दो-दो किलो भारी आंसू बहाते हैं, जो काम-चलाऊ फॉस्ट बॉलर बगल में खड़ा है उसे पूछते भी नहीं। अब आप पूछिये भाई कि फॉस्ट बॉलर को आप जब मौका ही नहीं देते तो टामसन कहां से पैदा होगा ? सिलेक्टरों और मैनेजरों की इसी धांधले बाजी का नतीजा है कि फॉस्ट बॉलर यहां पनपने नहीं पाते।

जगदीश प्रसाद झंवर—नापासर

प्र० : भारत और दक्षिणी अफ्रीका के बीच अब तक कितनें टैस्ट मैच हो चुके हैं अगर हुए हैं तो भारत ने कितने टैस्ट जीते व कितने हारे ?

उ० : भारत व दक्षिणी अफ्रीका के बीच कोई टैस्ट मैच नहीं हुआ।

अवध किशोर श्रीवास्तव—जबलपुर

प्र० : फुटबाल के सर्वश्रेष्ठ भारत के खिलाड़ी कौन हैं ?

उ० : हमारी राय में जेसीटी के इन्दर सिंह।

अशोक कुमार नाथानी—खरसिया

प्र० : प्रसन्ना ने अपने टैस्ट जीवन में कितनी विकेट लीं तथा कितने रन बनाये ?

उ० : प्रसन्ना ने भारत आस्ट्रेलिया १९७७-७८ सीरीज से पहले तक १८१ विकेटें लीं हैं।

राकेश चानना—पानीपत

प्र० : न्यूजीलैंड के कप्तान ग्लेन टर्नर का उच्चतम स्कोर ?

उ० : २५९ रन वेस्ट इंडीज के विरुद्ध।

खेल-खेल में

दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बैडमिंटन कैसे खेलें

बैडमिंटन का इतिहास

बैडमिंटन का खेल उतना ही लोकप्रिय है जितना लान-टेनिस। यह खेल प्रायः संसार के सभी देशों में खेला जाता है। कोई ऐसा खेल जिसे युवक-युवतियां मिल कर खेलना चाहें—उनमें बैडमिंटन का खेल सर्वोत्तम है।

भारत में भी बैडमिंटन का खेल बहुत लोकप्रिय है—स्कूल,कालेज, क्लब तथा ऊंची सोसाइटियों में यह खेल बड़े चाव से खेला जाता है।

शारीरिक स्वास्थ्य तथा स्फूर्ती के लिहाज से यह खेल बहुत लाभदायक है—मानसिक विकास में यह खेल बहुत लाभदायक है—मानसिक विकास में यह खेल पूर्ण सहायक है।

देखने में यह खेल भी टेबल टेनिस की तरह ही हल्का-फुल्का है। लेकिन इस खेल की गति बहुत तेज होती है जिससे शरीर का अच्छा-खासा व्यायाम हो जाता है। हालांकि यह खेल अधिक परिश्रम या शक्ति का नहीं है।

भारत में अंग्रेजी सैनिकों ने पूना में सबसे पहले इस खेल की शुरूआत की। लेकिन तब इसके नियम आदि का विकास नहीं हुआ था और न ही रैकेट आधुनिक रैकेट जैसा लचीला था।

सन १८५० में यह खेल पूना में बहुत लोकप्रिय हो गया तथा बहुत सम्पन्न लोग इस खेल में रुचि लेने लगे।

सन १८७० में सर्वप्रथम बैडमिंटन के नियम करांची में प्रकाशित हुए जिनके कारण इस खेल में बहुत कुछ सुधार हुआ।

भारत से जब कुछ फौजी लोग इंग्लैंड पहुंचे तो उन्होंने वहां भी इस खेल का प्रचार किया। कुछ ही वर्षों में यह खेल इंग्लैंड में लोकप्रिय हो गया।

फिर १८९० में कनाडा से होता हुआ सन १९०० में यह खेल अमरीका पहुंचा। वहां भी यह खेल शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया।

सन १८९५ में सर्वप्रथम बैडमिंटन संघ की स्थापना इंग्लैंड में हुई तथा १९३४ में विश्व संघ की स्थापना हुई। फिर तो यह खेल सारे संसार में फैल गया और स्कूलों, कालेजों, क्लबों में इसकी धाक जम गई। अन्य खेलों की तरह यह भी लोकप्रियता की ओर अग्रसर हो गया।
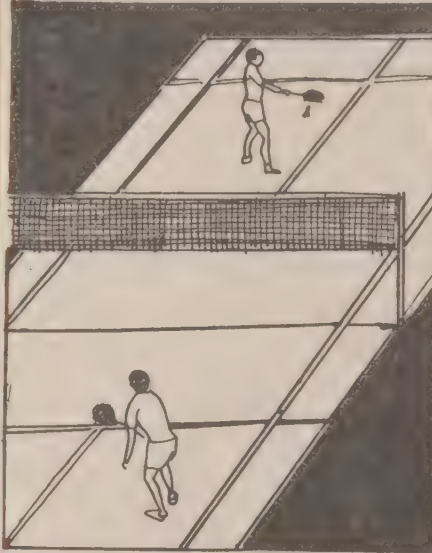
सन १९४८ में विश्व चैम्पियनशिप 'थामस कप' की शुरुआत हुई जिसमें संसार के बहुत से देशों ने भाग लेना शुरू कर दिया।

१९५७ में महिला चैम्पियनशिप के लिए 'उबेर कप' की शुरुआत हुई।

'थामस कप' चैम्पियनशिप में इंडोनेशिया, चीन तथा जापान का अधिकार रहा।

'उबेर कप' पर चीन, जापान, मलेशिया तथा इंगलैंड की महिलाओं का अधिकार रहा।

भारतवर्ष में भी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएं होती हैं जिनमें देश के सभी खिलाड़ी भाग लेते हैं।

बैडमिंटन कोर्ट तथा सामान

सिंगल कोर्ट

जब केवल एक-एक खिलाड़ी इस खेल को खेलते हैं तो कोर्ट की चौड़ाई कम होती है। इसे सिंगल कोर्ट कहा जाता है। सिंगल कोर्ट की लम्बाई ४४ फुट तथा चौड़ाई १७ फुट होती है।

४४ फुट लम्बाई के ठीक बीच में यानि २२ फुट की दूरी पर एक मध्य रेखा खिंची होती है जो पूरे क्षेत्र को बराबर भागों में बांटती है। इसी मध्य रेखा के ऊपर ५ फुट की ऊंचाई पर एक लम्बी जाली बंधी होती है।

मध्य रेखा से ६ फुट ६ इंच की दूरी पर मध्य रेखा के समानान्तर, मध्य रेखा के दोनों ओर एक-एक रेखा और खींची जाती है जिसे शार्ट सर्विस लाईन कहते हैं।

उसके ऊपर शार्ट सर्विस लाइन से १३ फुट की दूरी पर एक रेखा और खींची जाती है। यह रेखा लांग सर्विस लाइन कहलाती है। इस लाइन के बाद का हिस्सा २ फुट ६ इंच का बचता है जिसे बैक लॉबी कहते हैं तथा आखिरी लाइन को बैक बाऊंड्री लाइन कहा जाता है।

उसके बाद १७ फुट की चौड़ाई को भी दोनों भागों में बांटा जाता है। यह रेखा शार्ट सर्विस लाईन से बैक बाऊंड्री लाइन तक खींची जाती है यानि शार्ट सर्विस लाइन वाले भाग को चौड़ाई से आधा नहीं बांटा जाता।

इसी प्रकार मध्य रेखा के दूसरी तरफ वाले क्षेत्र को भी लाइनों द्वारा बांट दिया जाता है।

इस प्रकार सिंगल कोर्ट बन जाता है। लाइनों को सफेद चाक के पाउडर से अथवा चूने के घोल से बनाया जाता है। ध्यान रहे ये विभाजन वाली लाइनें डेढ़ इंच से ज्यादा मोटी नहीं होनी चाहियें।

चौड़ाई वाले हिस्से को जब दो भागों में बांटते हैं तो एक भाग को राइट सर्विस तथा दूसरे भाग को लेफ्ट सर्विस कोर्ट कहते हैं।

डबल कोर्ट

डबल कोर्ट में जिसमें दोनों तरफ दो-दो खिलाड़ी खेलते हैं—अन्तर केवल इतना होता है कि डेढ़-डेढ़ फुट की दोनों ओर चौड़ाई की तरफ से लाइनें और बढ़ जाती हैं। यानि १७ फुट की चौड़ाई को बढ़ाकर २० फुट कर दिया जाता है।

जिस प्रकार बैक लॉबी २ फुट ६ इंच की होती है उसी प्रकार दायीं बायीं दोनों तरफ डेढ़-डेढ़ फुट की साइड लॉबी और बन जाती हैं।

इस प्रकार डबल कोर्ट ४४ फुट लम्बा तथा २० फुट चौड़ा बन जाता है। बस सिंगल और डबल कोर्ट में इतना ही अन्तर होता है।

क्रमशः
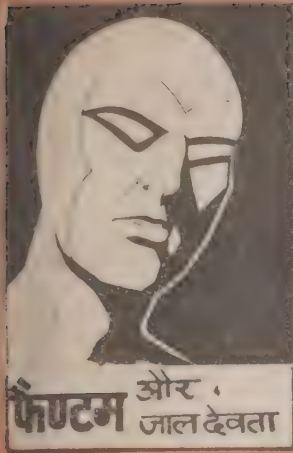
फैण्टम और जाल देवता

इनको अपने कर्मों का फल भुगतने के लिए अकेला छोड़ दिया जाता है।

तुम्हारा विश्वास है कि सफेद पाऊडर पूर्वी क्षेत्र से आता है ?
अनुमान है।
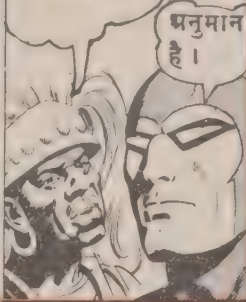
मनुष्य की बलि और दासप्रथा पूर्वी क्षेत्र में आज भी है।
बूढ़े मोज की बात का मतलब अब पता चला दवाई जो मार देती है और दासप्रथा अभी भी है···

जंगल के मुखिया की सभा
मेरा कहना मानो तो आज रात ही उस अजनबी को पकड़कर मार डालो।
लेकिन फैण्टम का विचार दूसरा है।
मुखिया यह अजनबी सिर्फ एक चमचा है।

हमें पूर्वी क्षेत्र में जाकर इसका पूरा गैंग तबाह करना चाहिये।
पूर्वी क्षेत्र का नाम लेते ही इनको जाल देवता और मनुष्य की बलि की याद आती है···
!!

चिन्ता में डूबी मुखिया की सभा
यह कैसे पता लगायें कि सफेद पाऊडर पूर्वी क्षेत्र से आता है ?
और यह भी कैसे पता लगायें कि पूर्वी क्षेत्र में अभी भी कोई रहता है ?
हमें पता नहीं··· मगर मेरा अन्दाजा है।
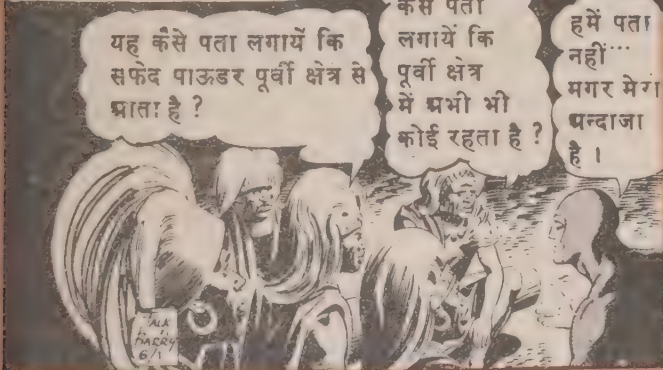
हम अपने रक्षकों को यह कैसे कहें कि जंगल छोड़ कर कहीं और चले जाओ जब तक हमें पूरा विश्वास न हो।
हां तुम नहीं कह सकते।
तुम्हारी शुभकामना होनी चाहिये, मुखिया मैं जाऊंगा।
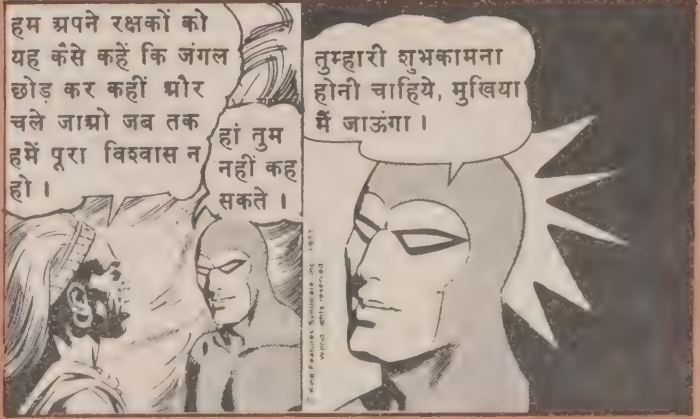
मुखिया की सभा।
मुखिया तुमने तो देखा ही है यह सफेद पाऊडर कितना खतरनाक है ?
अपने नोजवानों का भविष्य सोचो अगर इन्हें इसकी आदत पड़ जाये तो···

मैं कोशिश करूंगा कि इसको सारे जंगल में फैलने से पहले ही इसका खातमा कर दूं।

मुडलक फैण्टम, ओ चलते-फिरते भूत।

क्रमशः
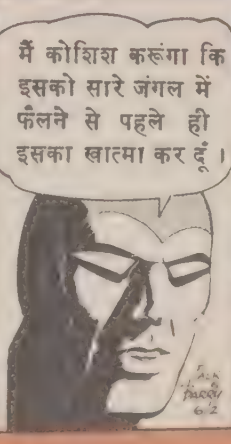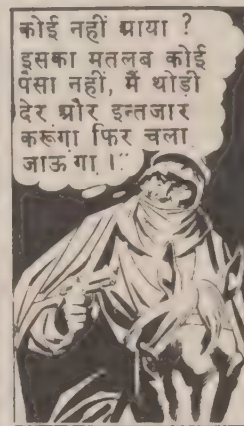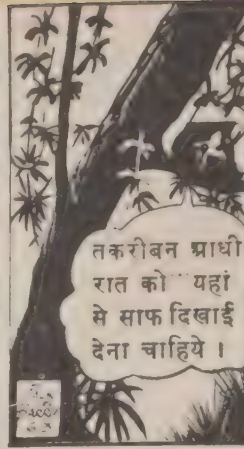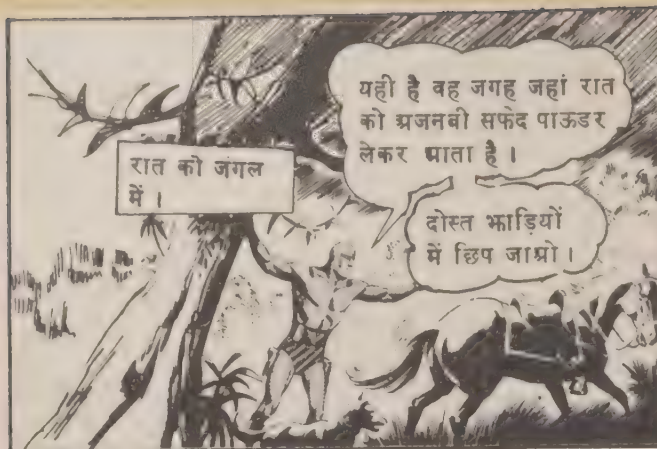
गुमनाम का परिणाम

अंक नं० 51 में तस्वीर नवीन निश्चल

दीवानी बात: रोज-रोज लाली पॉप लेने की जिद्द करते थे इसलिये तंग आकर श्रीमति जी ने घर से बाहर निकाल दिया

विजेता: नं० 1 नन्दा मूलचन्दानी (जयपुर)
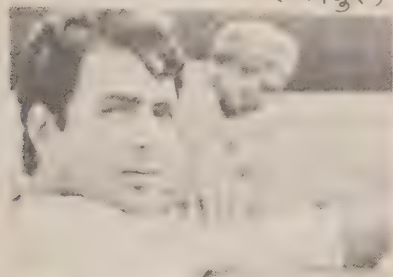
दीवानी बात: इनको इनकी धर्मपत्नी ने घर से बाहर इसलिये निकाल दिया कि रात को इनके खर्राटों से इनकी धर्मपत्नी की नींद खराब हो जाती है।

विजेता नं० 2 प्रेम कुमार बागरी (कलकत्ता)

चना कुरमुरा

नवयुवा दम्पति में पहली बार झगड़ा हुआ था । पति ने पत्नी को बहुत बुरा भला कहा, पत्नी रोने लगी ।

'वही हैं आप जो कहा करते थे की मैं आप के लिए स्वर्ग से आई हूं ...'

'यह तो मैं अब भी मानता हूं ।'

'सच ?' कुछ प्रसन्न होते हुए पत्नी ने कहा ।

'हाँ, तुम मेरे अपराधों के दण्डस्वरूप आई हो ।'

●

पत्नी—आपने मुझे यह तो बताया ही नही कि आपने शराब पीनी क्यों छोड़ी ?

पति—बात यह है कि पिछली बार जब मैं नशे में डूबा हुआ घर आया, तो मुझे एक की जगह तुम्हारे भाई दो दिखाई दिए—तभी से सहमकर मैंने शराब [illegible] दी ।

●

पति—मूर्ख न बनो ।

[illegible]—अब [illegible] तक [illegible] सम्बन्ध है तब कुछ मदा के लिए [illegible] [illegible] ।

छात्रा (नव विवाहिता सहेली से)—विवाहित जीवन का तुम्हें अच्छा अनुभव हो गया है न ?

नवविवाहिता—नहीं, विशेष नहीं । हाँ, पहले मैं काफी रात तक प्रमोद के जाने की राह देखती थी और अब काफी रात तक आने की राह देखती रहती हूं ।

●

एक मंत्री महोदय अपनी पत्नी से दो व्यक्तियों के सम्बन्ध में बातचीत कर रहे थे । बातचीत के दौरान में बोले, 'मैं उन दोनों व्यक्तियों को तब से जानता हूं । जब वे बच्चे थे । एक सुन्दर चतुर बालक था परन्तु दूसरा परिश्रमी था । दौड़ में चतुर बालक पीछे रह गया परन्तु परिश्रमी … वह बेचारा असामयिक मृत्यु का शिकार हो गया । फिर भी अपनी विधवा स्त्री के लिए एक लाख रुपया [illegible] गया । कैसा आदर्श जीवन है ?'

पत्नी ने मुस्कराते हुए कहा, हाँ, और मुझे आज प्रात ही मालूम हुआ कि चतुर साहब उस विधवा से विवाह कर रहे है ।

●

प्र० : हमें छींक क्यों आती है ?

गौरी, ब्रह्म—हसनपुर जागीर

उ० : अजीब बात है कि छींक को केवल बाहरी क्रिया ही नहीं समझा जाता अपितु उसका इससे अधिक महत्व माना जाता है। इसलिए इसके साथ बहुत से पुराने विश्वास तथा गाथाएं जुड़ी हैं।

असल में छींक से प्राकृतिक रूप में मुंह और नाक से हवा जोर से बाहर फेंकी जाती है। ये शारीरिक क्रिया हमारे नियंत्रण में नहीं है। नाक के अन्दर की श्लेष्मा झिल्ली पर उत्तेजना उत्पन्न होने की छींक अनुक्रिया है। कभी-कभी दृक्-तंत्रिका पर तेज प्रकाश पड़ने पर भी छींक आती है।

नाक में अनुक्रिया उत्पन्न कई कारणों से हो सकती है। जैसे नाक के अन्दर के भाग में सूजन, जो प्रायः जुकाम इत्यादि होने पर हो जाती है, या किसी बाहरी वस्तु के अन्दर आने से अथवा किसी एलर्जी के कारण। छींकने की क्रिया द्वारा उत्तेजित करने वाली वस्तु को बाहर फेंकने का प्रयास शरीर द्वारा किया जाता है।

पुराने लोग छींक को आने वाली आपत्ति की चेतावनी समझते थे। ऐसा भी विश्वास था कि दाँए और छींकना भाग्यशाली तथा बाँए छींकना अशुभ होता है। आदिकाल के लोग इसे मृत्यु का संकेत भी मानते थे और इन्हीं कारणों से छींक आने पर कहते थे, 'भगवान भला करे।'

****

प्र० : कृत्रिम उपग्रह अन्तरिक्ष में किस प्रकार रहता है, तथा इनके क्या उपयोग हैं ?

रूपेश कुमार जैन—यमुना नगर

उ० : कृत्रिम उपग्रह पृथ्वी के चारों ओर चक्कर काटता हुआ, धागे के सिरे पर बंधे घूमते हुए अखरोट के समान होता है। उपग्रह की घूमने की अपकेन्द्री शक्ति इसे बाहर को खींचती है और पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति अथवा धागा इसे दूर जाने से रोकता है। अन्तरिक्ष में उपग्रह को रोकने के लिए हवा न होने के कारण, उपग्रह पृथ्वी के चारों ओर घूमता रहता है। उपग्रह सदा ही पृथ्वी के चारों ओर घूमता रहेगा जब तक ये पृथ्वी के पास न आ जाये तथा ऊपर का वायु मण्डल उपग्रह को रोकने के प्रयत्न में उसकी चाल धीमी न कर दे।

कृत्रिम उपग्रह के बहुत से उपयोग हैं जैसे संचार उपग्रह रेडियो की तरंगों को ग्रहण कर उन्हें दूर तक फेंकती है जिसके द्वारा संसार में भिन्न-भिन्न महाद्वीपों में टेलीफोन तथा टी० वी० सम्बन्ध होने संभव हुए हैं। वैज्ञानिक उपग्रह अन्तरिक्ष के वातावरण के बारे में हर प्रकार की जानकारी ग्रहण करते हैं। ये सूर्य तारों तथा अन्य ग्रहों को ध्यान से देखते रहते हैं तथा उसकी पूरी जानकारी हम तक पहुंचाते हैं। मौसम उपग्रह सारी पृथ्वी के मौसम के चित्र भेजते हैं जिसके कारण मौसम की भविष्यवाणी और अधिक ठीक तौर से की जाती है। और दूसरे उपग्रह समुद्र में जहाजों को मदद देते हैं तथा हवाई जहाजों के यातायात को ठीक से चलाने में मदद देते हैं। और सबसे आधुनिक प्राकृतिक सम्पत्ति उपग्रह, पृथ्वी के गर्भ में छिपे तेल के भंडार, समुद्र में मछलियों के समूह तथा फसलों में फैले नाशकारी रोगों का बहुत जल्दी पता देते हैं जिन रोगों को दूर कर हम अपनी फसलों को बचा लेते हैं।

****

प्र० : फ्रिज में कौन-सी गैस होती है और ये फ्रिज को कैसे ठंडा रखती है ?

नरेश चन्द्र—दिल्ली

उ० : हम जानते हैं कि गर्मी अधिक गर्म से थोड़ी गर्म वस्तु में प्रवाहित होती है। परन्तु ठंडक को ठंडी वस्तु से गर्म वस्तु में प्रवाहित करना हो तो उसे एक व्यवस्था द्वारा ही किया जा सकता है।

फ्रिज में ये काम गैस को ठंडा करके किया जाता है। तरल पदार्थों का तापमान उसके उड़ने पर तथा गैस का तापमान उसके फैलने पर कम होता है। इसी सिद्धांत पर फ्रिज का निर्माण किया गया है। अधिकतर घरेलू फ्रिजों में फ्रीओन गैस का प्रयोग किया जाता है, सल्फर डाई आक्साइड (एस. ओ.२) तथा अमोनिया (एन. एच.२) का रेफ्रिजेरेशन में प्रयोग किया जाता है। फ्रिज में सम्पीडक (कम्प्रेसर) बिजली की मोटर से चलता है। सम्पीडक गैस को सम्पीडन-कक्ष में सम्पीडित करता है। सम्पीडित होते समय गैस का तापमान बढ़ जाता है और आस-पास के तापमान से अधिक हो जाता है और इसमें से बेकार गर्मी रेफ्रीजरेटर के बाहर फेंक दी जाती है। इसी समय एक वैल्व के खुलने पर गैस फैलने वाले कक्ष में प्रवेश करती है और उसका तापमान एकदम कम हो जाता है। फलस्वरूप फ्रिज के भीतर भी तापमान कम हो जाता है और उसमें रखी वस्तुएं ठंडी हो जाती हैं। अन्त में ये गैस फिर सम्पीडन कक्ष में चली जाती है, यही क्रम बार-बार चलता है।

****

प्र० : आइसोटोप क्या होते हैं ?

रीता लुनिया—आसाम

उ० : एक तत्व के सारे अणुओं में एक बराबर न्यूट्रोन नहीं पाये जाते। जिसके कारण आणविक वजन में अन्तर हो जाता है। हालांकि उसमें पाए जाने वाले अलैक्ट्रोन और प्रोटोन सब अणुओं में बराबर होते हैं। दूसरे शब्दों में अणुओं की आणविक संख्या वही होती है परन्तु आणविक वजन अलग-अलग भी होता है। ऐसे अणुओं को आइसोटोप कहते हैं।

****

प्र० : पेड़ की आयु का कैसे पता लगाया जा सकता है ?

इन्द्रजीत सिंह चंचल—बेरमो

उ० : आयु बढ़ने पर पेड़ केवल लम्बाई में ही बड़ा नहीं होता बलिक इसका तना भी उतना ही मोटा होता जाता है तने के मध्य में हर वर्ष नई लकड़ी उगती है और पहली लकड़ी को बाहर को धकेल देती है पेड़ की लम्बाई, उसके तने की मोटाई या उसकी छाल की मजबूती से किसी पेड़ की आयु का पता नहीं चलता। आयु का पता केवल कटे हुए पेड़ के तने को देखकर लगाया जा सकता है तने के कटे भाग को देखने पर उसके मध्य से चलकर बाहर को बढ़ते हुए कई चक्कर दिखाई देते हैं। हर एक चक्कर के बीच की लकड़ी की तह हर वर्ष में बढ़ी लकड़ी होती है। और इन चक्करों को गिनकर हम पेड़ की सही आयु का अनुमान लगा सकते हैं। बहुत बड़े और पुराने चीड़ इत्यादि के पेड़ों के चक्करों को गिनने पर ये कई कई सौ वर्ष पुराने तक पाये गये हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

जनता पार्टी और कांग्रेस के खेल

हाल में ही आंध्र में भयानक तूफान आया। हजारों, लाखों जानों की क्षति हुई। इस बीच जनता पार्टी और कांग्रेस ने क्या किया? वे एक-दूसरे पर दोष डालने का खेल खेलने लगे। आगे भी कई और प्राकृतिक निपदायें आयेंगी तब के लिए हम जनता पार्टी और कांग्रेस को 'एक-दूसरे पर कैसे कीचड़ फेंकें' विषय पर अपने बहुमूल्य सुझाव मुफ्त लुटा रहे हैं। आशा है दोनों पार्टियां हमारे सुझाव नोट करके रखेंगी और समय आने पर काम में लायेंगी।

चेचक फैलने पर

कांग्रेस पार्टी ने जनता पार्टी को बद-नाम करने के लिए ही चेचक फैलाया है।

चेचक जनता पार्टी की गलत आर्थिक नीतियों के कारण फैला है।
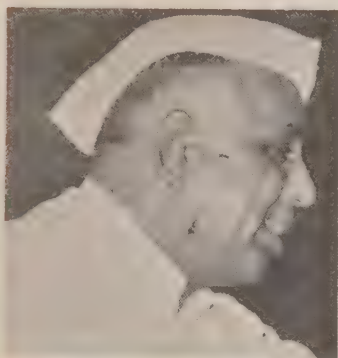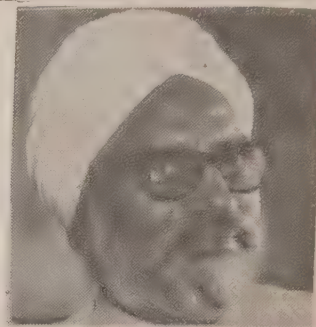
लू चलने पर

विरोधी दल सरकार के खिलाफ आग उगल रहे हैं। वही लू का रूप धारण कर चल रही है।

जनता पार्टी देश के सामने खड़े जलते प्रश्नों को हल करने में असफल रही है। वही जलते प्रश्न लू का कारण है।
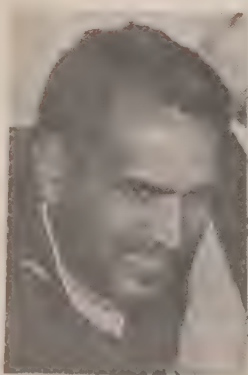
शीत लहर चलने पर

सत्ता छिनने पर कांग्रेस कुर्सी के लिये जो ठंडी आहें भर रही है वही इसका कारण है।

जनता सरकार के राज में महंगाई के कारण लोगों की जेबें इतनी ठंडी हो गई हैं कि शीत लहर चलने लगी है।
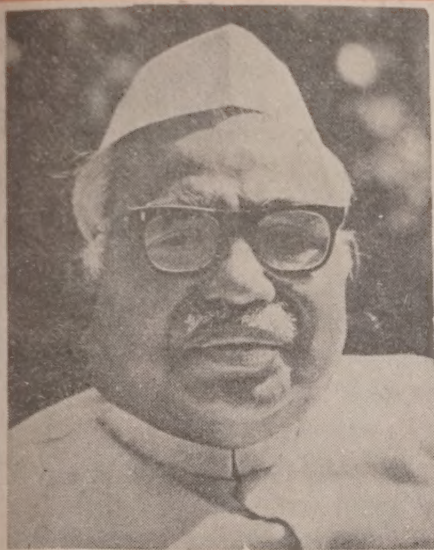
अकाल पड़ने पर

हम क्या करते, कांग्रेसी नेताओं ने कभी यह मांग नहीं की कि सेना को अकाल दूर करने के काम पर लगाया जाये। हम खुद क्यों लगाते सेना को ?
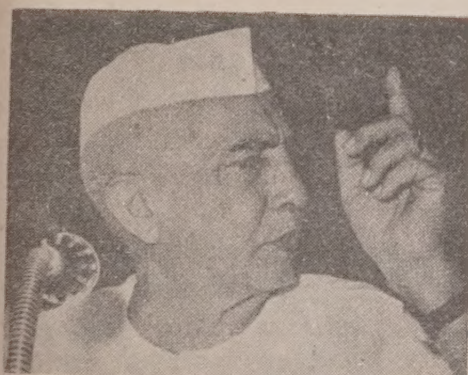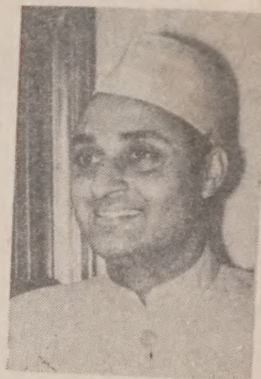
भूचाल आने पर

भूचाल निराश कांग्रेसियों की तोड़-फोड़ का नतीजा है।

जनता पार्टी ने रैली के लिए लाखों लोग इकट्ठे किये। उससे धरती पर भार इतना पड़ा कि भूचाल आ गया !
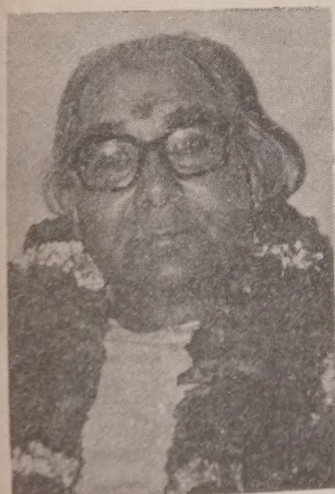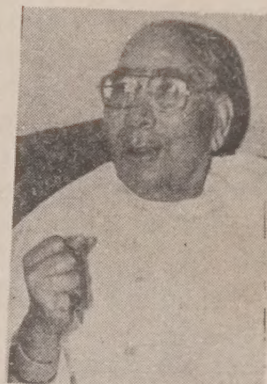
रेगिस्तान बढ़ने पर

कांग्रेस ने लोगों की आंखों में इतनी धूल झोंकी है कि अधिकतर इलाकों में अब रेत ही रेत रह गयी है।

जनता पार्टी अपनी असफलताओं को शतुर्मुर्ग की तरह रेत में सिर दबाकर छिपाने के लिये रेगिस्तान को बढ़ावा दे रही है।
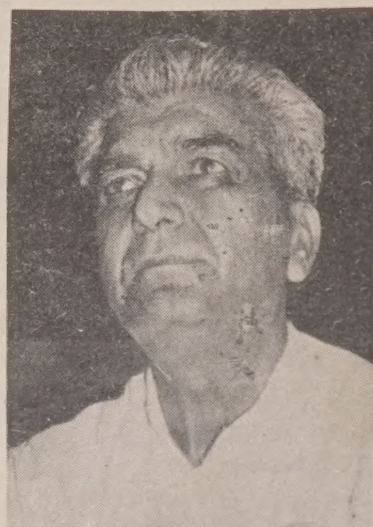
अपने प्रश्न केवल
पोस्ट कार्ड
पर ही भेजें ।

नरेन्द्र कुमार—कपूरथला : क्या यह सच है कि भगवान सबकी सुनता है ?

उ० : सुनता तो सबकी है, पर कभी-कभी उल्टी सुन जाता है । जैसे एक आदमी गांव की पगडंडी पर थका हुआ जा रहा था । उसने भगवान से प्रार्थना की, हे भगवान, सवारी के लिए कोई घोड़ा भेज दे । इस पर पास ही घोड़ी पर चढ़े तहसीलदार की आवाज आयी, 'ओ मुर्गे जैसी गर्दन वाले, इधर आ ! मेरी घोड़ी ने बच्चा दिया है । इसे कमर पर उठा कर गांव तक ले चल । उस आदमी ने अपनी थकी हुई सांसों पर काबू पाते हुए घोड़ी के बच्चे को उठा लिया और आकाश की ओर देखते हुए बोला, 'हे, भगवान, तूने कितना उल्टा समझा है । मैंने घोड़ा नीचे सवारी के लिए मांगा था, तूने मेरे ऊपर सवारी के लिए भेज दिया ।

राम सेवक गर्ग—ग्वालियर : क्या घसीटा राम के बीस साल के तजुर्बे में धक्के खाने ही लिखे हैं ?

उ० : नहीं, आंसू पीने भी लिखे हैं । उनके कर्म ही ऐसे हैं :

ओ देने-वाले तूने तो कोई कमी न की
अब किसको क्या मिला ये मुकद्दर की
बात है ।

विश्वनाथ शर्मा—पूर्णिया : क्या कोई ऐसा उपाय है कि विदेशों में पत्र-मित्र बना सकूं ।

उ० : दीवाना फ्रेंड्स क्लब में हम यह सिलसिला आरम्भ करने पर विचार कर रहे हैं ।

शंकर दयाल वर्मा—नागपुर : 'लेडीज फस्ट' की बात को आप कहां तक मानते हैं ?

उ० : इस हद तक, जैसे एक साहब बहादुर अपनी मेम साहब के साथ जंगल में शिकार खेलने गये । अचानक सामने से एक चीता निकल आया । मेम साहब ने साहब बहादुर से कहा, 'गोली चलाओ' । इस पर साहब बहादुर ने मेम साहब के हाथ में बंदूक देकर कहा, 'लेडीज फस्ट' और उचक कर पेड़ पर चढ़ गया ।

केवल प्रकाश अरोड़ा—काशीपुर : क्या आप जीवन को मजाक समझते हैं, जो प्रश्नों के उत्तर हंसी मजाक में देते हैं ?

उ० : हम क्या मजाक करेंगे । जीवन देने वाले ने कितना बड़ा मजाक किया है । डोर उसके हाथ में है और हम हाथ-पांव मारकर अपने को तीसमारखां समझते हैं । अब बताइए कसूर किसका है ?

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी 'ऊषा'—विक्रमगंज : चाचा जी, रूठी हुयी पत्नी को मनाने की कोई दीवानी तरकीब बताइये ?

उ० : पहले ऐसा कीजिए जैसा हम नीचे एक शेर में बता रहे हैं । और इस शेर को इतनी जोर से बोलिए कि आवाज विक्रमगंज से दिल्ली तक आए, फिर बतायेंगे, शेर है :

मेरा सर इनके कदमों पर, ये दामन को
बचाते हैं,
चचा इतना बता दो कैसे, रूठों को मनाते हैं ।

विनोद कुमार अग्रवाल—सोजत रोड : आप ने कभी क्रिकेट खेली है तो अधिक से अधिक कितने रन बनाए हैं ?

उ० : जब भी हम बैटिंग के लिए मैदान में उतरे हैं तो बैटिंग की तालियां तो अभी रुकी भी नहीं कि आऊट होकर वापिस आने की तालियां भी साथ ही बजती रहीं ।

सुरेन्द्र सिंह यादव 'भाई,—कानपुर : दीवाना की प्रतियोगिताओं के लिए समय कम होता है इसलिए हम भाग नहीं ले पाते । कृपया अन्तिम तिथि बढ़ाकर दिया करें ?

उ० : हम आपकी यह शिकायत दूर करने और पूरा ध्यान देंगे ।

दीन दयाल केसरी, हजाम—रांची : चाचा मनुष्य कब झूठ बोलता है ?

उ० : जब वह कहता है कि मैं जीवन कभी झूठ नहीं बोलता ।

तहसिनुद्दीन मोसिनुद्दीन—जाफराबाद चाचा जी, आप अपनी शादी के समय घ पर बैठे थे या कार में ?

उ० : साइकिल पर बैठे थे । कार उन दि भारत में आई नहीं थीं । और घोड़े के ब बर हमारी अपनी कीमत नहीं थी.।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला उ० : आजकल के जमाने में उपकार कर वाले को क्या मिलता है ?

उ० : जो दीवाना के परोपकारी को मिलत है ?

कैलाश चन्द्र गोड़—अजमेर : मैंने बड़े चा से गुमनाम है कोई प्रतियोगिता अंक ४८ भाग लिया था । उसका परिणाम देखा त यह जानकर दुख हुआ कि आपके यहां भ धांधली चलती है ।

उ० : हो सकता है आपका पत्र डाक में इध उधर भटक कर हम तक देर से पहुंचा हो और दीवाना का अंक प्रेस में जो चुका हो इसके और भी बहुत से कारण हो सकते हैं पर हम आपको और दीवाना के सभी पाठको को यह विश्वास दिलाते हैं कि हमारे किसी विभाग में धांधली नाम को चीज नहीं ।

सुरेश खुराना, पप्पी—जींद : आप प्रश्न का उत्तर देने की क्या फीस लेते है क्योंकि बिना फीस के अब तक तो आपने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया नहीं ।

उ० : आप चटपटे और नए-नए प्रश्न भेजिए । यही हमारी फीस है । एक जैसे प्रश्न बार-बार दोहराये जायें तो वे हमारे सर पर कितने बाल है ? आपके मुंह में कितने दांत हैं ? क्या आप चाची से डरते हैं ? इन प्रश्नों से हटकर जीवन की दूसरी समस्याओं के बारे में प्रश्न कीजिये फिर देखिये क्या फटाफट उत्तर मिलता है ।

कूपन

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली ११०००२

परोपकारी

अरे मुन्नी, तू रो रही है ? क्या हुआ बता तो ?

हू-हू-ऊंऽऽऽ !

परोपकारी अंकल मेरी बिल्ली खो गई है। उसे घर का रास्ता भी नहीं आता। अब स्वीटी का क्या होगा ?

बस इतनी सी बात है ?

तू रो नहीं। मैं अभी ढूंढ़ता हूँ तेरी स्वीटी को। जाएगी कहां यहीं कहीं होगी।

अच्छा अंकल।

स्वीटी-स्वीटी !
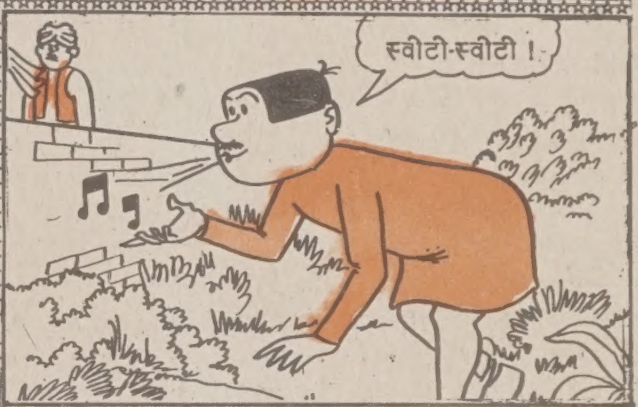
कौन है ये बेशर्म ? बाग में लड़कियों को सीटी मारता है ?

पर-पर मैं तो स्वीटी को...

परोपकारी ? कम से कम तुमसे तो यह उम्मीद नहीं थी।
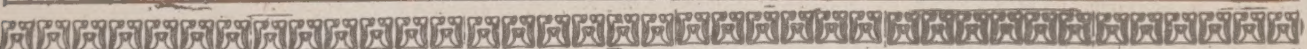
पत्नियों की ट्रेड यूनियन

फिक्र तौंसवी

कुछ दिन हुए मैं रात को जब घर लौटा। और मर्दाना रवायत के अनुसार देर से लौटा तो क्या देखता हूं कि मेरी पहली और आखिरी पत्नी ने अपने गोरे-गोरे कंधे पर एक काला बिल्ला लगा रखा है।

मैंने निवेदन किया, 'यह क्या है हुजूर ?'

वह बोली, 'झंडा ऊंचा रहे हमारा।'

मेरा माथा ठनका कि आज दाल में कुछ काला है। चांद सा चेहरा जो कल तक सौंदर्य की प्रतिमूर्ति था आज किसी क्रान्तिकारी दल का पोस्टर मालूम हो रहा था। जिस पर लिखा था :—

'उठो, मेरी दुनिया के गरीबों को जगा दो। काखे उमरा के दरो दीवार हिला दो।'

मैंने थोड़ा-सा मुस्करा कर (और थोडा सा डरकर) कहा—'ऐ मेरी प्यारी काखे उमरा (राजमहल) पहले खाना ले आओ।'

वह अपनी सुडौल बांहों को किसी झंडे की तरह लहराकर बोली आज खाना नहीं मिलेगा। आज चूल्हा डाऊन स्ट्राईक है।'

संदेह विश्वास में बदलने लगा कि मामला गम्भीर है और अब श्रीमती जी के साथ रोमांटिक वार्ता करना व्यर्थ है। यह किस सिरमगर ने घर पर इन्कलाबी छापा मारा है कि आज श्रीमती जी की आंखों में काजल की रेखा के बजाय मांगों का चार्टर दिखाई देता है ! मामले की गम्भीरता को देखकर मैंने भी अपना स्वर बदल लिया। और मालिकाना रोब के साथ कहा 'तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि तुम मेरी पत्नी हो !'

तड़ाक से जवाब आया, 'हां'''हां'''मैं पत्नी के इलावा भी कुछ हूं, यानी एक वर्कर हूं और आप मेरी मेहनत का शोषण करते हैं।'

'मगर डार्लिंग !' मैंने उसका आक्रमक रवैया देखकर एकदम अपना रवैया बदल लिया और कहा, 'मालिक तो तुम हो, मेरे दिलो जान की मालिक, इस घर की मालिक। अगर में सल्तनत हूं तो तुम इस सल्तनत की नवाब बाजिद अली शाह हो। बताओ हो कि नहीं !'

एक दिन पहले तक मेरा यह वाक्य जादू का सा काम कर जाता था और श्रीमती जी तड़प कर मेरी बाहों में झूलने लगती थीं लेकिन आज बाहों में आने के बजाय उसने अपनी नर्म व नाजुक मुट्ठी दिखाई और मेज पर मारती हुए बोली—'सेठ साहब ! लच्छेदार शब्दों के ये छलावे अब नहीं चलेंगे। सदियों से जुल्म की चक्की में पिसती हुई पत्नी अब जागृत हो चुकी है और अब तो वह अपने अधिकार मनवा कर दम लेगी ! और'''और'''और क्या कहते हैं वो कि'''हां, जो हम से टकरायेगा, चूर-चूर हो जाएगा।'

मैंने पूछा, 'चूर-चूर करने से पहले यह बताओ कि क्या आज हमारे घर में कोई प्रगतिवादी कवि आया था ?'

वह बोली, 'नहीं ! वह कवि सदियों से मेरे अन्दर सोया हुआ था। लेकिन आज वह जाग उठा है। अतः मेरी मांगें माननी पड़ेंगी, नहीं तो'''?'

'कौन सी मांगें ?' मैंने एन्टी कवि यानी आलोचक की बुलन्दी से पूछा !

''''सबसे पहले'''' श्रीमती जी ने गले में थूक निगलते हुए कहा। उसकी आवाज घुंघरुओं की मधुर झंकार नहीं थी बल्कि युद्ध के नगाड़े की सी घन गरज थी। 'हां, सबसे पहले मेरी मांग यह है कि मेरे काम के घंटे घटाए जायें ! सुबह पांच बजे से मुर्गे के साथ बांग देती हूं और फिर रात के ग्यारह बजे तक काम करती रहती हूं जब मुर्गा तक मुझे बोर समझ कर सो जाता है। गोया अठारह-अठारह घंटे काम करती रहती हूं। क्या सभ्य समाज का यही नियम है ?'

'मगर डार्लिंग ! हमारा तो भारतीय समाज है।'

वह भड़क उठी—'और बाई दि वे ! एक बात नोट कर लीजिए कि जब तक मांगों पर बात-चीत जारी रहे आप मुझे डार्लिंग शब्द से न पुकारें। हां, बताइए भारतीय समाज को सभ्य बनाने के लिए नौ घंटे का समय आपको स्वीकार है ?'

मैंने कहा, 'देखो डार्लिंग'''वैरी सारी'''डार्लिंग नहीं वर्कर बेगम ! अगर इस घर में केवल नौ घंटे काम हुआ तो इससे प्रोडक्शन पर प्रभाव पड़ेगा। इसका अर्थ तो यह हुआ कि काम की दो शिफ्टें करनी पड़ेंगी। दो शिफ्टें यानी दो पत्नियां। क्या तुम चाहती हो कि मैं इस घर में दो पत्नियां ले आऊं ?'

सौत की डाह औरत जात की कमजोरी है और मैंने जानबूझ कर इस नाजुक रग पर अंगुली रख दी। मेरा उद्देश्य यह था कि ट्रेड-यूनियन में फूट पैदा हो जाय। मगर आह ! मेरी पत्नी के अन्दर शायद वह पुरानी ईर्ष्यालु औरत मर चुकी थी। बोली—यह मालिक की अपनी प्राब्लम है। आप चाहे कोई भी प्रबन्ध कर लें। चाहें तो एक नौकरानी रख लें, चाहें तो'''।'

यानी श्रीमती जी सौत वाले पहलू से अपना दामन साफ बचा कर निकल गईं। उसकी यह चतुराई मालिक के लिए परेशानकुन थी। चुनांचे मैंने एक और हथियार निकाला—'मगर उसे तनख्वाह कहां से देंगे जितनी तनख्वाह मिलती है तुम्हारे कोमल हाथों पर लाकर रख देता हूं। तुम चाहो तो इस तनख्वाह में से एक नौकरानी रख सकती हो।'

'इस तनख्वाह में नौकरानी नहीं रखी जा सकती ?'

'तो फिर क्या किया जाए डार्लिंग।'

'फिर डार्लिंग।'

'माफ करना वर्कर बेगम !'

'वर्कर बेगम ने पहले ही कह दिया कि यह मालिक की अपनी प्राब्लम है। उसे खुद सोचना चाहिए।'

'आल राइट,' मैंने तंग आकर कहा—'मैनेजमेंट इस पर सहानुभूति पूर्वक विचार करेगा। अगली मांग पेश की जाए।'

'अगली मांग छुट्टियों की है।'

'स्थायी छुट्टी की ? मगर इसकी पेशकश तो मैं कई बार कर चुका हूं मगर हर बारे तुमने घृणा से ठुकरा दिया।'

'देखिए आप इसे मजाक में मत टालिए।' (हालांकि भगवान कसम। यह